G20
भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

मुंबई मिंट पत्रिका

अंक : सत्ताईस : वर्ष : 2023

भारत सरकार टकसाल

(भारत प्रतिभूति मुद्रण एवं मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई)

एनबीएल/आईएसओ : 17025-2017 प्रमाणित संगठन

सीआईएन : U22213DL2006GOI144763

मिनी-रत्न श्रेणी सीपीएसई

(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)

शहीद भगतसिंह रोड, फोर्ट, मुंबई-400 001. टेलिफोन : 91-22-2270 3184/2266 2555

फैक्स : +91-22-2266 1450 • ई-मेल : igm.mumbai@spmcil.com • वेबसाइट : www.igmmumbai.spmcil.com

❖ संरक्षक ❖
श्री सुधीर साहू
मुख्य महाप्रबंधक

❖ संपादक ❖
सुश्री प्रेरणा पुरी
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

❖ सहयोग ❖
श्री एल. के. पाल
पर्यवेक्षक (राजभाषा)

श्री अंशुल कुमार
कनिष्ठ कार्यालय सहायक

अंक : सत्ताईस (वार्षिकांक-2023)
गृह पत्रिका

* पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त किये गए विचार लेखकों के निजी विचार हैं। रचना की मौलिकता और अन्य किसी विवाद के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होगें।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	लेखक	पेज
1.	संदेश		1-4
2.	संरक्षक की कलम से		5
3.	संपादकीय		6
4.	मशीन लर्निंग (एमएल) और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई)	नीलू द्विवेदी	7
5.	नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता	विकास कुमार त्रिपाठी	8
6.	सोने की चिड़िया और उसके सोने का इतिहास	सुनील रॉय	9-10
7.	अपनी भाषा से सीख सकते हैं नई भाषा: व्यतिरेकी विश्लेषण का सिद्धान्त	एल.के. पाल	11-12
8.	कविताएं	पुरेन्द्र सी. दूबे	13
9.	पी.डी.के.वी. अकोला	जे.पी. कावरे	14-15
10.	टकसाल - मेरी पहचान	पुरेन्द्र सी. दूबे	16
11.	अभी तक बारिश नहीं हुई?	के. राजशेखर नायडू	16
12.	प्रकृति के पंच तत्व	अंशुल कुमार	17-18
13.	सफलता से कई ज्यादा महत्वपूर्ण है, असफलता	अमित भास्करराव कौलकर	19-20
14.	बेटियां	विजयशंकर मौर्य	20
15.	सुभद्रा कुमारी चौहान : हिन्दी साहित्य की राष्ट्र कवयित्री	नितिन म. चाफले	21-22
16.	राजभाषा उत्थान में तकनीकी की भूमिका	कविता सं मोरे	23-25
17.	सिक्कों की मिंटिंग	प्रेरणा पुरी	26-27
18.	कौन हैं 2023 के नोबेल पुरस्कार विजेता और क्यों मिला है इन्हें पुरस्कार?		28-29
19.	माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा भारत सरकार टकसाल का निरीक्षण		30
20.	संयुक्त राजभाषा सम्मेलन		31
21.	हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन		32-35
22.	गोल्ड रिफाइनरी का उद्घाटन		36
23.	सतर्कता जागरूकता सप्ताह		37
24.	सेवानिवृत्ति		38-39

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
मिनिरत्न श्रेणी-I, सीपीएसई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Limited
Miniratna Category-I, CPSE
(Wholly owned by Government of India)

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
Chairman & Managing Director

विजय रंजन सिंह
Vijay Ranjan Singh

:: संदेश ::

भारत सरकार टकसाल की वार्षिक मिंट पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर मैं अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।

टकसाल मुंबई की कार्य पद्धति की विशेषता है कि यहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्यों एवं ज़िम्मेदारियों के प्रति प्रतिबद्ध रहता है और अपनी संस्कृति और भाषा को गर्व के साथ अपनाकर आगे चलता है। हिन्दी संघ की राजभाषा है और इसी भाषा को प्रचारित करने के लिए प्रत्येक वर्ष भारत सरकार टकसाल द्वारा मुंबई मिंट पत्रिका प्रकाशित की जाती है।

इस पत्रिका में आप सभी के लेखों और विचारों को पढ़कर मन प्रसन्नता से भर आता है। यह पत्रिका हमारे आस-पास उभरती प्रतिभाओं का साधन बनती है तथा हिन्दी भाषा की सहज अभिव्यक्ति की परिचायक है। पूरा दिन कम्प्यूटर अथवा फ़ैक्टरी में काम करने के बाद कलम और कागज़ पर अपनी भावनाओं को उकेरने का माध्यम बनती है।

'दो वर्तमान का सत्य सरल, सुंदर भविष्य के सपने दो,
हिंदी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो।'

– गोपाल सिंह नेपाली

टकसाल मुंबई में हिन्दी के राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरंतर अथक प्रयास किए जा रहे हैं। इन्हीं प्रयासों का परिणाम है कि हमें वर्ष 2022-23 के लिए नराकास, मुंबई (उपक्रम) द्वारा उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए सम्मानित किया गया।

आप सभी को इस अंक के प्रकाशन की हार्दिक बधाई।

आशा करता हूँ यह पत्रिका अपना उद्देश्य पूर्ण करने में सफ़ल हो और इसमें छपी रचनाएँ सभी पाठकों का ज्ञानवर्धन करें।

(विजय रंजन सिंह)

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
मिनिरत्न श्रेणी-I, सीपीएसई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Limited
Miniratna Category-I, CPSE
(Wholly owned by Government of India)

सुनील कुमार सिन्हा, निदेशक (मानव संसाधन)
Sunil Kumar Sinha, Director (Human Resource)

:: संदेश ::

भारत सरकार टकसाल, मुंबई की वार्षिक हिंदी पत्रिका, मुंबई मिंट पत्रिका-2023 के संपादन के अवसर पर आप सभी को आत्मिक बधाई।

भाषा एक माध्यम है जो इस संसार के सभी प्राणियों को परस्पर जोड़े रखती है। हिन्दी भाषा इतनी विस्तृत और समृद्ध है कि इसमें अभिव्यक्ति करना सहज हो जाता है और इस बात की पुष्टि हाल ही में हुई जी-20 बैठक से हो चुकी है। यह भाषा व्याकरणिक रूप से शुद्ध और भावात्मक परिपक्वता लिए हुए है।

मुंबई टकसाल द्वारा निरंतर ही, पूर्ण श्रद्धा और निष्ठा से राजभाषा नियमों और आदेशों का अनुपालन किया जाता रहा है। मुझे ज्ञात हुआ कि हाल ही में संसदीय राजभाषा समिति तथा वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग द्वारा टकसाल का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया और आप सबके प्रयासों को सराहना प्राप्त हुई। इसके साथ ही न.रा.का.स. मुंबई (उपक्रम) से भी टकसाल मुंबई को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए सम्मानित किया गया। यह सब आप सभी के प्रयासों से ही संभव हो पाया है। हिंदी के प्रति आप सभी की सद्भावना को देखकर मेरा हृदय हर्षित है।

इस पत्रिका का प्रकाशन टकसाल के सभी कर्मचारियों और अधिकारियों को एक दूसरे के संवेदनशील पक्ष से जुड़ने का मौका देता है। इसी पत्रिका के माध्यम से मुझे आप सब को जानने, समझने और रूबरू होने का भी मौका मिलता है।

मैं आशा करता हूँ कि जिस तत्परता से आप सभी हिन्दी को अपने कामकाज की भाषा बनाने के प्रयासों में अभी तक जुड़े रहे हैं, उसी तरह आगे भी काम करते रहेंगे।

आप सभी को हृदयगत शुभकामनाएं।

(सुनील कुमार सिन्हा)

अजय अग्रवाल
AJAY AGARWAL
निदेशक (वित्त)
Director (Finance)

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
(वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Limited
(Under Ministry of Finance, Government of India)

:: संदेश ::

'मिंट पत्रिका 2023' के प्रकाशन के अवसर पर आप सभी को बधाई।

वर्तमान दौर में हिन्दी विश्व की भाषा बन चुकी है। दुनिया भर के लोग हिन्दी बोलना और सीखना चाहते हैं। इससे न केवल हिन्दी भाषियों के लिए रोज़गार के अवसर उजागर हो रहे हैं बल्कि उनकी संस्कृति तथा भाषाई विशेषता का ज्ञान भी दुनिया को हो रहा है।

गतवर्ष संयुक्त राष्ट्र ने हिन्दी भाषा को अपनी भाषाओं में शामिल करने के प्रस्ताव को शामिल किया है। यह हम सभी के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। यह भाषा समस्त विश्व के बीच संबंधो की कड़ी बन रही है। ऐसे में हम सभी का भी यह दायित्व बनता है कि हम अपनी राजभाषा हिन्दी को अधिक बढ़ावा दें तथा कार्यालय में किए जाने वाले दैनिक कार्य हिन्दी में करें। हमारा उद्देश्य हिन्दी की शुद्धता को बरकरार रखते हुए इसे सहज बनाना है और इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमें निरंतर प्रयास करते रहना है।

'जब आज मेरे सामने, है रास्ता इतना पड़ा,
जब तक मंज़िल न पा सकूँ, तब तक मुझे न विराम है,
चलना हमारा काम है।'

– शिवमंगल सिंह सुमन

भारत सरकार टकसाल द्वारा राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए जो प्रयास किए जा रहे हैं, वह सराहनीय हैं। अभी हाल ही में मुंबई (उपक्रम) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा भारत सरकार टकसाल को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए सम्मानित किया गया। यह अत्यंत हर्ष का विषय है।

आशा करता हूँ कि हिन्दी के प्रयोग को लेकर आप सभी के प्रयास भविष्य में भी जारी रहेंगे तथा हम इसी तरह प्रगति के पथ पर अग्रसर होते रहेंगे।

मिंट पत्रिका के प्रकाशन की एक बार पुनः हृदयगत शुभकामनाएँ।

अजय अग्रवाल

(अजय अग्रवाल)

विनय कुमार सिंह भा.रा.से.
Vinay K. Singh, I.R.S.
मुख्य सतर्कता अधिकारी
Chief Vigilance Officer

सत्यमेव जयते

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा
मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
(वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)

Security Printing and
Minting Corporation of India Limited
(Under Ministry of Finance, Government of India)

:: संदेश ::

साथियों,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारत सरकार टकसाल, मुंबई की वार्षिक हिंदी पत्रिका, मुंबई मिंट पत्रिका 2023 प्रकाशित हो रही है। पत्रिका प्रकाशन का उद्देश्य हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करना है। इसके माध्यम से इस संस्था में कार्यरत कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को उभरने का मौका मिलता है और पाठकों को अच्छा साहित्य पढ़ने का।

सतर्कता और भाषा का भी गहरा संबंध हैं। अपने निजी तथा पेशेवर जीवन में जहां हमें प्रक्रियाओं और नियमों के अनुसार आचरण को लेकर सतर्क रहना होता है, उसी तरह भाषा के प्रयोग में भी सावधानी अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है। भारत भाषायी विविधताओं का देश है लेकिन हिन्दी एक ऐसी लचीली भाषा है जो सभी भाषाओं और बोलियों के तत्व को समेटे हुए है। यह विनम्र भी है और सशक्त भी।

वर्तमान में भारत के अधिकतर राज्यों में हिंदी भली-भांति बोली एवं समझी जाती है। हिंदी का प्रयोग ज्ञान-विज्ञान, चिकित्सा, विधि आदि सभी क्षेत्रों में बढ़ने लगा है। अब तो भाषा तकनीकी के साथ संबद्ध होकर स्वयं को ही विकसित और विस्तृत कर रही है। ऐसे में सरकार द्वारा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कंठस्थ 2.0 सॉफ्टवेयर तथा एक विस्तृत ई-शब्दकोश, 'शब्दसिंधु' की पहल बहुत सराहनीय है।

साहित्यिक गतिविधियां हम सबको संवेदनशील बनाए रखती हैं। आशा करता हूँ कि भारत सरकार टकसाल, मुंबई की वार्षिक हिंदी पत्रिका का प्रकाशन हमारी भाषा और ज्ञान को अधिक समृद्ध करेगा।

मुंबई मिंट पत्रिका, 2023 के प्रकाशन के लिए पुनः हार्दिक शुभकामनाएँ।

(विनय कुमार सिंह)

संरक्षक की कलम से...

मुंबई मिंट पत्रिका 2023 के प्रकाशन के इस अवसर पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

प्रत्येक वर्ष यह पत्रिका टकसाल के सभी कार्मिकों को एक दूसरे के साथ जुड़ने और जानने-समझने का अवसर देती है। इस वर्ष भी अपनी धरोहर को आगे बढ़ाते हुए मिंट पत्रिका वर्षभर की गतिविधियों एवं लोगों के विचारों को समेटे हुए हम सबके समक्ष प्रस्तुत है।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना की नीति अपनाई गई है ताकि देश की एक संपर्क भाषा विकसित हो सके। यह नीति एसपीएमसीआईएल और टकसाल के उत्कृष्टता और नवाचार युक्त उत्पादकता के उद्देश्यों को प्राप्त करने में भी सहायक है।

हमारे कार्यालय में प्रत्येक कर्मचारी का यह प्रयास रहता है कि वह अपना यथासंभव कार्य हिन्दी में ही करे। हम सबके प्रयासों एवं निष्ठा से इस वर्ष भारत सरकार टकसाल, मुंबई को मुंबई (उपक्रम) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा सम्मानित किया गया। इसी एक वर्ष की अवधि में संसदीय राजभाषा समिति तथा वित्त मंत्रालय द्वारा भारत सरकार टकसाल, मुंबई का हिन्दी कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण किया गया, जिसमें टकसाल द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की गई।

यह हमारे लिए आत्मश्लाघा का नहीं बल्कि गर्व का विषय है। मुंबई टकसाल में काम कर रहे कर्मचारी तकनीकी क्षेत्र में तो अपने काम के प्रति सत्यनिष्ठ हैं ही, इसके साथ ही इनकी साहित्य एवं अपनी भाषा के प्रति निष्ठा एवं रूचि की झलक भी इस पत्रिका के माध्यम से देखने को मिलती है।

आप सभी को मिंट पत्रिका के प्रकाशन की पुनः हार्दिक शुभकामनाएँ।

(सुधीर साहू)
मुख्य महाप्रबंधक

संपादकीय

मुंबई मिंट पत्रिका का 2023 का यह अंक अपनी पुरानी धरोहर को लेकर चलते हुए नए प्रयासों और अभिनवों का परिणाम है। कोई भी नई परियोजना अपने आरंभ से पूर्व, परिकल्पना, योजना, निर्माण, संकलन, संशोधन, आदि चरणों से गुज़रती है। मुंबई मिंट पत्रिका के प्रकाशन में भी इन चरणों से गुज़रने की प्रक्रिया में आप सभी की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। नवीन प्रयासों के बाद यह पत्रिका आपके समक्ष प्रस्तुत है।

कहते हैं कि अगर किसी भी संगठन की संरचना को समझना है तो सबसे पहले उसकी भाषा को समझिए। भाषा से हमें वहाँ के लोगों के व्यक्तित्व, कार्यशैली, तथा उनके भावों का ज्ञान होता है। हमारे संविधान निर्माताओं ने इस बात पर बल दिया कि किसी भी प्रकार का कार्य यदि अपनी निज भाषा में हो तो उससे कार्य करने में न केवल आसानी होगी अपितु हमारी सांस्कृतिक धरोहर भी भाषा के माध्यम से जीवंत रहेगी। जहां एक ओर केंद्र सरकार हिन्दी राजभाषा का अधिकाधिक उपयोग करने तथा कार्यप्रणाली को सरल करने पर ज़ोर दे रही है, तो वहीं दूसरी ओर वह क्षेत्रीय भाषाओं का भी सम्मान कर रही है। अभी हाल ही में हुई संसदीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में माननीय गृह मंत्री ने यह बात रखी कि हिन्दी क्षेत्रीय भाषाओं की प्रतिस्पर्धी नहीं है अपितु वह सबको एक सूत्र में पिरोने का साधन है। यह जीवंत है, लोचक है, व्यापक है तथा सभी भाषाओं को अपने में समेटे हुए है। भाषायी विविधता वाले इस देश में एक ऐसी भाषा का होना आवश्यक है जो जन-जन की भाषा हो तथा सुगम हो। हिन्दी में सबको जोड़ने का सामर्थ्य है तथा यह पत्रिका हिन्दी को हम सबके अधिक निकट लाने का ही प्रयास है।

भारत सरकार टकसाल को न.रा.का.स. मुंबई (उपक्रम) से उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए पुरस्कृत किया गया है। यह सब आप सभी के राजभाषा हिन्दी के प्रति स्नेह तथा भाषा में कार्यनिष्ठा से ही संभव हो पाया है।

हिन्दी अनुभाग यह आशा करता है कि यह अंक आपकी आशा के अनुरूप हो।

प्रेरणापुरी

(प्रेरणा पुरी)
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

मशीन लर्निंग (एमएल) (ML) और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) (AI)

नीलू द्विवेदी
संयुक्त महाप्रबंधक (सू.प्रौ.)

मशीन लर्निंग (एमएल) और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) एक तेज़ी से विकसित होने वाला क्षेत्र है जिसका उद्देश्य उन कार्यों को करने में सक्षम हार्डवेयर या सॉफ्टवेयर बनाना है जिनके लिए पारंपरिक रूप से मानव बुद्धि की आवश्यकता होती है। एआई सिस्टम, मशीन लर्निंग तकनीकों का उपयोग करके सीखने और निर्णय लेने के लिए जटिल एल्गोरिदम और बड़ी मात्रा में डेटा का उपयोग करते हैं।

उपयोग और इसके अन्य प्रभाव

वित्त, स्वास्थ्य सेवा, विपणन और विनिर्माण सहित विभिन्न उद्योगों में एमएल और एआई का व्यापक प्रयोग किया जाता है। इसने फेशियल और स्पीच की पहचान, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और स्वायत्त वाहनों जैसे क्षेत्रों में क्रांति ला दी है। जैसे-जैसे डेटा की उपलब्धता और कंप्यूटिंग शक्ति बढ़ती जा रही है, वैसे ही एम.एल और एआई से नवाचार को चलाने तथा प्रौद्योगिकी और हमारे आसपास की दुनिया के साथ संपर्क बनाने के तरीके को बदलने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है। हालाँकि, एम.एल और एआई की क्षमता अपार है लेकिन पूर्वाग्रहों, व्यक्तिगत डेटा तक पहुंच, गोपनीयता संबंधी चिंताएँ, नैतिक विचार, और पारदर्शिता की आवश्यकता महत्वपूर्ण पहलू बने हुए हैं, क्योंकि एम.एल और एआई संबंधी अनुप्रयोग हमारे दैनिक जीवन में अधिक व्यापक हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त, एम.एल और एआई द्वारा निर्णय लेने की प्रक्रिया, महत्वपूर्ण मुद्दों में व्यक्ति की ज़िम्मेदारी और आत्मविश्वास को कमज़ोर कर सकती है। इससे उन क्षेत्रों में सुरक्षा के लिए जोखिम पैदा हो सकते हैं, जहां एम.एल और एआई महत्वपूर्ण कार्यों का प्रबंधन करता है।

क्या और कैसे ?

मशीन लर्निंग (एम.एल), कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का एक सब सेट एल्गोरिदम और सांख्यिकीय मॉडल बनाने की प्रक्रिया है जो बिना किसी नए कौशल के अथवा स्पष्ट रूप से सिखाए बिना कंप्यूटर में मौजूदा कौशल में सुधार करने देता है। मशीन लर्निंग (एमएल) कंप्यूटर को पैटर्न की पहचान करने, परिणामों का अनुमान लगाने और डेटा से अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में सक्षम बनाता है, जिसके परिणामस्वरूप अततः अधिक सटीक और प्रभावी निर्णय लेने में मदद मिलती है।

अंतर्निहित पैटर्न और संबंधों को खोजने के लिए बड़े डेटा सेट पर प्रशिक्षण मॉडल की प्रक्रिया मशीन लर्निंग (एमएल) के केंद्र में है। एमएल के तीन मुख्य उप प्रकार हैं:

- सुपरवाइज़्ड लर्निंग
- अनसुपरवाइज़्ड लर्निंग
- रीइनफोर्समेंट लर्निंग

सुपरवाइज़्ड लर्निंग में, एल्गोरिथम को उस डेटा के आधार पर प्रशिक्षित किया जाता है जिसे लेबल किया गया है और जहां वांछित परिणाम इनपुट के साथ प्रस्तुत किया जाता है। प्रशिक्षण के दौरान देखे गए इनपुट और आउटपुट के आधार पर मॉडल पूर्वानुमान लगाना सीखता है।

एआई सिस्टम डेटा में पैटर्न की पहचान करने और पूर्वानुमान लगाने या निर्णय लेने के लिए सुपरवाइज़्ड लर्निंग, अनसुपरवाइज़्ड लर्निंग और रीइनफोर्समेंट लर्निंग का उपयोग करते हैं। सुपरवाइज़्ड लर्निंग सही प्रतिक्रिया प्रस्तुत करता है। एआई के नए कौशल सिखाने के लिए प्रोत्साहन का उपयोग करता है।

एआई में विभिन्न क्षेत्रों में क्रांति लाने की क्षमता है, जैसे कि दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित करना, चिकित्सा निदान में सुधार करना, यातायात सुरक्षा में सुधार करना और उद्यमों को अनुकूलित करना। हालांकि, एआई से उत्पन्न प्रतिकूल प्रभाव सुरक्षा, गोपनीयता और नैतिक निहितार्थ जैसी चिंताओं को संबोधित किया जाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि एआई की प्रगति मानवीय मूल्यों और हितों के साथ संरेखित हो।

नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता

विकास कुमार त्रिपाठी
उत्कीर्णक

मानव समाज के वह मूलभूत आचरण जो मनुष्य को नैतिक कार्य करने के लिए प्रेरणा देते हैं,'मूल्य' कहलाते हैं। मानवीय इतिहास मे समाज का निर्माण आपसी सहयोग का परिणाम है। मानव जब असभ्य था तो उसे नैतिकता और अनैतिकता का ज्ञान नहीं था। उसने शिकार के दौरान स्वयं को अकेला और असुरक्षित महसूस किया तथा जिसके परिणामस्वरूप एक समुदाय, कबीले और समाज का निर्माण हुआ लेकिन इस सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए सामाजिक मूल्यों का होना आवश्यक है, जिसका आधार प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक आचरण है।

जीवन के लिए सही क्या है? गलत क्या है? अच्छा क्या है? बुरा क्या है? नैतिकता इस अंतर को परिभाषित करती है। इतिहास ने हमेशा हमें यह चेतावनी दी है कि जब मानव ने अपने नैतिक मूल्यों का त्याग किया है, तब मानव जाति का भयानक संहार हुआ है। वहीं दूसरी तरफ नैतिकता के मार्ग पर मानव समाज की रक्षा तथा कल्याण करने वाले महात्मा गांधी, बाबा साहब अंबेडकर, स्वामी विवेकानन्द जैसे महापुरुषों को इतिहास ने सराहा भी है। प्रेम, दया, समभाव, सत्य, अहिंसा, ये नैतिकता के सार्वभौमिक मूल्य हैं जो एक ही धागे में पिरोये गए मोती हैं, जिनके व्दारा ही इस सृष्टि का पालन हो रहा है।

महाभारत काल में सर्वश्रेष्ठ वीर, महादानी, मित्रता के प्रति निष्ठावान, कर्ण का कुरुक्षेत्र में संहार हुआ। योगी कृष्ण जो सब जानने वाले हैं, वो कर्ण की वीरता का गुणगान तो गाते हैं परंतु युद्ध में उसका संहार करने का समर्थन करते हैं। इसका कारण यही है कि इन सभी गुणों के होते हुए भी कर्ण अपने अधिकारों को पाने की लालसा में नैतिक मूल्यों को भूल गया। जबकि दूसरी तरफ विदुर जो समाज की उसी जाति की दुर्भावना से अपमानित हुए परंतु अपने नैतिक मूल्यों को कभी नहीं छोड़ा और हस्तिनापुर के दरबार में अपना वह सम्मान स्थापित किया, जो कर्ण को मृत्योपरांत भी नहीं मिल सका। नैतिक आचरण ही हमें जीवित रखता है।

गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं–

'दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान,
तुलसी दया न छोड़िए, जब लगी घट मे प्राण'

दया व्दारा ही मनुष्य मनुष्यता को प्राप्त करता है। अहंकार तो पाप की जड़ है। जब हम अहंकार मे होते हैं तो निश्चय ही हमें केवल अपनी चिंता होती है तथा हम अपना स्वार्थ देखते हैं। जबकि,

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे संतु निरामया:

की भावना ही मानव को मानव से जोड़ती हैं।

इसलिए व्यक्ति से व्यक्ति, व्यक्ति से समाज और समाज से राष्ट्र का एकीकरण नैतिक अचारण से ही संभव हैं।

कबीर दास जी कहते हैं–

'साई इतना दीजिए जा मे कुटुम समाय,
मैं भी भूखा न रहू साधु ना भूखा जाए'

यही जीवन का मूल्य है।

सोने की चिड़िया और उसके सोने का इतिहास

सुनील रॉय
क.कम्पाउंडर

2021 की दीवाली में रॉयल मिंट, ब्रिटेन ने माँ लक्ष्मी की तस्वीर वाले सोने के बार का उद्घाटन किया था। 999 कैरेट शुद्ध सोने का यह बार 20 ग्राम का था। ब्रिटेन के इस प्रयास के बहुत से पहलू हमारे समक्ष आते हैं। 1,080 पाउंड का यह बार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत पट्टी के महत्व को दर्शाता है। यह प्रयास दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं भू-राजनीतिक सम्बन्धों की गहनता का प्रमाण बना। हमारे भारत में भौतिक सोने की बहुत अधिक मात्रा में खरीद होती है, विशेषकर दीवाली, अक्षय तृतीय, गुड़ी पाडवा आदि जैसे त्योहारों में। इन त्योहारों में स्वर्ण खरीदना शुभ माना जाता है।

भारत में सोने की व्यापक खरीद का कारण इसके साथ जुड़े भावनात्मक और सांस्कृतिक पहलू से है। यहाँ सोना खरीदने का अर्थ निवेश तो है ही लेकिन इसकी खरीद का मुख्य पहलू इसकी भावनात्मक, विरासत तथा संस्कृति से जुड़ा है। यहाँ हम भारतीय संस्कृति में सोने के महत्व की बात करेंगे।

■ भारतीय संस्कृति और स्वर्ण

भारत में सोने का महत्व आज से नहीं बल्कि वर्षों से विद्यमान है। यह उत्कृष्ट धातु, जंग निरोधक, एवं नम्य है। इसे किसी भी आकार में ढाला जा सकता है। स्वर्ण धातु का ज़िक्र साहित्य के सबसे प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में भी मिलता है। इससे इस सृष्टि के निर्माण की कहानी जुड़ी है। ऋग्वेद में ऐसा माना गया है कि सृष्टि का निर्माण 'हिरण्यगर्भ' से हुआ, जिसका तात्पर्य स्वर्ण बीज/स्वर्ण अंडे या स्वर्ण गर्भ से है। इसके अलावा उपनिषदों आदि ग्रन्थों में भी इसका ज़िक्र मिलता है। हमारी भारतीय संस्कृति में सुख, संपत्ति की देवी, माँ लक्ष्मी की पूजा की जाती है। उनकी मूर्तियों में भी संपत्ति को उनके अभय मुद्रा में एक हाथ से सोने अथवा स्वर्ण की वर्षा के रूप में दिखाया जाता है।

इसके अतिरिक्त भारतीय संस्कृति के इतिहास एवं प्राप्त शिलालेखों एवं मूर्तियों में सोने के आभूषणों का ज़िक्र मिलता है। ग्रन्थों एवं साहित्य में भी इसका उल्लेख मिलता है।

■ सोने का स्त्रोत

यह कोई आज या कल की खोज नहीं है। सोने के कई स्त्रोत हैं। पहले ज़माने में सोने को जलोढ़ मिट्टी अथवा अल्लुवियल मिट्टी के कणों से निष्कर्षित किया जाता था। इसका उल्लेख ऋग्वेद के नदीसूक्त में भी मिलता है। इसमें विभिन्न नदियों के पास की मिट्टी से सोने को निकालने का उल्लेख है। उसमें सिंधु नदी को हिरण्यायी कहा गया है यानी सोना देने वाली। इसके अलावा कौटिल्य ने भी बड़ी चट्टानों से तरल सोने के निष्कर्षण का उल्लेख किया है।

■ भारत में सोने की मिंटिंग

अभी तक हमने सोने के अनुप्रयोग के महत्व के बारे में जाना। इसका उपयोग आभूषण बनाने, धार्मिक साँचे में ढालने आदि के अलावा उपयोग विनिमय तथा मूल्य को स्टोर करके रखने के लिए भी मुद्रा के रूप में किया जाता था। वैदिक एवं अन्य पौराणिक साहित्य में राजाओं द्वारा सोने की मोहरें आदि का उल्लेख मिलता है। उस समय बिना स्टैम्प लगे सोने के सिक्कों को हिरण्य-पिंड कहते थे तथा स्टैम्प लगे सिक्कों को, उनके मूल्यों के बढ़ने के अनुक्रम में इन्हें निष्क, सुवर्ण, एवं मशक कहा जाता था। वैदिक काल के ख़त्म होते-होते सुलभ रूप से प्रस्तुत अल्लुवियल मिट्टी से उपलब्ध सोना सूख चुका था इसलिए तब तांबे और चांदी के सिक्कों का चलन आरंभ

हुआ। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मिंट सुपरिंटेंडेंट (लक्षांध्यक्ष) तथा सिक्के के निरीक्षक (रूपदर्शक) का उल्लेख भी मिलता है।

कुछ समय बाद जब चांदी भी महंगी होनी शुरू हुई तो चांदी के सिक्कों में तांबे और अन्य धातुओं का मिश्रण शुरू हुआ।

हालांकि, भारत में उस समय तक व्यापार शुरू हो गया था। जो भी निर्यातक भारत से मसाले, कपड़े, आदि खरीद कर जाते थे, वह बदले में पर्याप्त सोना एवं चांदी के सिक्कों के माध्यम से विनिमय करते थे। इसी के कारण भारत को सोने की चिड़िया कहा जाने लगा। यह भारत का स्वर्ण युग था तथा इसी समय मगध में गुप्त राज्य का विकास हुआ। इस राज्य के राजाओं ने माँ लक्ष्मी की तस्वीर वाले सोने के सिक्कों की मिंटिंग शुरू की। चौहान राजवंश के विग्रहराज IV ने 12वीं शताब्दी में रामटांक सिक्कों की मिंटिंग की। सन 1318 के दिल्ली सल्तनत के मिंट मास्टर ने अपने द्वारा लिखे गए द्रव्य-प्रकाश में सीता-रमी नाम के सोने के सिक्के की मिंटिंग का उल्लेख किया है। शेरशाह सूरी द्वारा सोने (मोहर), चांदी (रुपैया) एवं तांबे (दाम) के सिक्कों की मिंटिंग की शुरुआत की गई तथा यह धरोहर मुग़लों के समय में भी जारी रही।

■ भारत सरकार टकसाल में सोने के सिक्कों की मिंटिंग

भारत सरकार टकसाल में सोने के सिक्कों एवं मेडलों की मिंटिंग की जाती है। सोने के सिक्कों की ब्लैंक से लेकर अंतिम उत्पाद तक समस्त प्रक्रिया यहीं होती है। वर्तमान में भारत सरकार टकसाल में स्मारक सिक्कों के निर्माण पर बल दिया जा रहा है। यह विभिन्न डिज़ाइन, वज़न के होते हैं तथा विभिन्न विशेष अवसरों पर जारी किए जाते हैं। इन सोने के सिक्कों की मिंटिंग की प्रक्रिया नीचे दी गई तस्वीर में दी जा रही है:

डिज़ाइन एवं डाई उत्पादन

स्त्रोत : बुलियन बाई पोस्ट

अपनी भाषा से सीख सकते हैं नई भाषा: व्यतिरेकी विश्लेषण का सिद्धान्त

एल. के. पाल
पर्यवेक्षक (राजभाषा)

स्कूल में, कॉलेज में, कार्यालय में हर जगह एक-न-एक बार तो सभी ने यह सुना होगा कि एक से अधिक भाषाएँ सीखनी चाहिए। अपनी भाषाओं के साथ-साथ विदेशी भाषाओं के ज्ञान से हमारी सीखने और समझने की क्षमता बढ़ती है। यह भी दावे से कहा जा सकता है कि हम सभी ने कभी तो कोई नई भाषा सीखने की कोशिश भी की होगी लेकिन फिर 'मुश्किल है!' सोच कर रुक गए होंगे। भाषा विज्ञान में एक ऐसी ट्रिक या सिद्धान्त है जिससे हम अपनी भाषा के माध्यम से किसी भी नई भाषा को आसानी से सीख सकते हैं। वह सिद्धान्त है व्यतिरेकी विश्लेषण का। इसमें भाषाओं के बीच व्यतिरेकों या समस्याओं को समझकर भाषाओं को सीखा और समझा जा सकता है।

क्या है व्यतिरेकी विश्लेषण?

'व्यतिरेकी विश्लेषण' अंग्रेज़ी के 'contrastive analysis' शब्द का हिंदी पर्याय है, जिसे दो भाषाओं का तुलनात्मक विश्लेषण भी कहा जा सकता है। रोमानियत इंग्लिश कंट्रास्टिव एनेलिसिस प्रोजेक्टर के आयोजकों के अनुसार 'दोनों भाषाओं की ध्वनि व्यवस्था, व्याकरण, शब्दावली एवं लेखन व्यवस्थाओं की तुलना प्रस्तुत करना। इस तुलना का उद्देश्य दोनों भाषाओं में विद्यमान ऐसी संरचनागत समानताओं और असमानताओं पर प्रकाश डालना है जो दोनों भाषाओं के सीखने वालों में मनोवैज्ञानिक उलझनें पैदा कर देती हैं।'

व्यतिरेकी विश्लेषण में उन कठिनाइयों-समस्याओं के बारे में पूर्वानुमान करने की प्रक्रिया को अपनाया जाता है जो किसी एक भाषा-भाषी व्यक्ति को अन्य भाषा सीखने में आती है।

कैसे होता है व्यतिरेकी विश्लेषण?

रूपपरक तुलनीयता

रूपपरक में ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि भाषाई इकाइयों के संदर्भ में दो भाषाओं में अनुवाद्यता स्थापित की जाती है।

उदाहरण के लिए; अंग्रेज़ी के एक साहित्यकार के नाम की वर्तनी है- 'Baodrillard' किंतु उच्चारण के स्तर पर अनुवादक के लिए यह समस्या बन जाती है कि इस नाम की वर्तनी 'बौड्रिलार्ड' लिखें अथवा कुछ और। जबकि इसकी सही वर्तनी है- 'बौद्रीआँ'।

भारतीय जनमानस के लिए 'Restaurant' (रेस्तराँ), और विशेष तौर पर दिल्ली के धौला कुआँ क्षेत्र के आसपास रहने/आने-जाने वालें के लिए 'Benito Juharez Marg' (बेनितो हुआरेज मार्ग) इसी प्रकार के कुछ प्रचलित उदाहरण हैं।

शब्दों के स्तर पर भी भाषाओं में कई प्रकार के रूपात्मक व्यतिरेक मिलते हैं।

उदाहरण के लिए, अंग्रेज़ी के मध्यम पुरुष सर्वनाम के रूप में केवल 'you' सर्वनाम है जबकि हिंदी में मध्यम पुरुष 'तू', 'तुम' और 'आप' - तीन प्रचलित रूपों में है। 'तू' जहाँ अत्यंत निकटता अथवा अत्यधिक अनादर की स्थिति का सूचक

है तो 'तुम' अनौपचारिक संबोधन/संबंध का। जबकि, 'आप' सर्वनाम औपचारिक संदर्भ में प्रयुक्त होता है।

इसी प्रकार अंग्रेज़ी में विशेषण के तीन रूप हैं– ('good, better, best')। जबकि हिंदी में ऐसी व्यवस्था नहीं है।

Ashna has a good record in studies. आशना पढ़ाई में अच्छी है।
Aradhya's record in studies is better than Ashna. आराध्या पढ़ाई में आशना की तुलना में अच्छी है।
Namya has the best record in studies in the class. नम्य पढ़ाई में पूरी कक्षा में सबसे अच्छी है।

शब्द के स्तर पर व्यतिरेकी बिंदुओं को समान शब्दावली के अभाव के रूप में देखा जा सकता है।

उदाहरण के लिए, हिंदी के शब्द 'लोटा' को लिया जा सकता है। अंग्रेज़ी भाषा में इस पात्र के लिए कोई शब्द नहीं है। हालांकि शब्द की प्रयोगधार्मिता के आधार पर इससे मिलते-जुलते 'jug', 'mug', 'pot' शब्द मिलते हैं किंतु इनमें से कोई भी 'लोटा' नहीं हैं। इसी को अगर दूसरे कोण से देखा जाए तो यही समस्या अंग्रेज़ी के 'jug', 'mug', और 'pot' शब्दों के लिए हिंदी में समतुल्य शब्द के अभाव की है।

अर्थपरक तुलनीयता

जब दो भाषाओं के शब्दों के बीच तुलना अर्थ के आधार पर हो तो वह अर्थपरक (semantic) तुलनीयता कहलाती है। अर्थपरक तुलनीयता के शब्दों में अर्थ के स्तर पर अंतर होता है। उदाहरण के लिए, अंग्रेज़ी के 'uncle' शब्द के अर्थ के आधार पर हिंदी में 'चाचा', 'मामा', 'फूफा' शब्द। ये स्थितियाँ भाषाओं में अतिभेदकता और अल्पभेदकता को दर्शाती हैं।

संदर्भपरक तुलनीयता

इसी परिप्रेक्ष्य में अंग्रेज़ी साहित्य-संस्कृति में प्रयुक्त होने वाले 'Good Friday' शब्द को भी देखा जा सकता है जो हिंदी में अनूदित होकर 'शुभ शुक्रवार' नहीं हो सकता क्योंकि 'Good Friday' वाले दिन प्रभु ईसा मसीह को क्रूस पर लटकाया गया था। इसलिए वह 'पुण्य तिथि' है।

इस तरह, भाषा-समाज की संस्कृति के अलग-अलग संदर्भों में अंग्रेज़ी के एक ही शब्द के लिए अलग-अलग शब्द प्रयुक्त होते देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, अंग्रेज़ी पद 'Father', 'Mother', 'Sister' को लिया जा सकता है जिनके क्रमशः हिंदी समतुल्य शब्द 'पिता', 'माता', 'बहन'। किंतु यदि यह कहा जाए कि 'Mother Teresa' तो उसकी हिंदी समतुल्य प्रस्तुति क्या होगी? सामान्य हिंदी भाषी व्यक्ति के लिए इसका लिप्यंतरण 'मदर टेरेसा' ही किया जाएगा। इसी प्रकार अस्पताल में काम करने वाली 'sister', 'बहन' न कहलाकर 'सिस्टर' ही कहलाएगी।

कहने का अभिप्राय यह है कि इस प्रकार के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ भाषाओं में असमानता की स्थिति ला देते हैं। यही कारण है कि व्यतिरेकी विश्लेषण करते समय भाषाओं का संदर्भपरक तुलनात्मक विश्लेषण भी किया जाता है। अतः इस तरह के व्याकरणिक संदर्भों को जानकर, हम भाषाओं के बीच असमानताओं से भाषाओं को समझ और सीख सकते हैं।

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्
पात्रात्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मम्ततः सुखम् ।

भावार्थ: विद्या से विनय आता है। विनय से योग्यता, योग्यता से धन, धन से धर्म और धर्म से सुख प्राप्त होता है।

पुरेन्द्र सी. दूबे
वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक

गरीब की लाचारी - दहेज

सुंदर थी, सुशील थी,
हर कार्य में न्यारी थी।

गरीब की जवान बेटी,
फिर भी कुँवारी थी।

मिला था एक वर,
पर मांग उसकी भारी थी।

मांगों की यह बेड़ी,
गरीब की लाचारी थी।

टी.वी, मोटर, फ्रिज, कूलर से,
मांग उसने पूरी करी थी।

सुनकर भी अनजान बनना,
बाबुल की मजबूरी थी।

कई बार मिली बेटी,
बाबुल से पर कुछ न बोली थी।

बेटी तो नहीं बोली,
पर हालत उसकी बोली थी।

अंत में मिली बेटी जब,
चिर निद्रा में सोई थी।

हाँ,मांग उसकी भरी थी,
सिंदूर से वह सजी थी।

चारों तरफ से शोर था,
सुहागन ही तो मरी थी।

वह ज़ुबान है हिंदी

जिसमें है सरलता,
जिसमें है सभ्यता,
जिसमें है संस्कृति,
जिसमें है सम्मान,
वह ज़ुबान है हिंदी....

जिसमें है माँ का प्यार,
जिसमें है पिता का दुलार,
जिसमें है दादी की कहानी,
जिसमें है नाना-नानी,
वह ज़ुबान है हिंदी...

जो अपनों को करीब लाती,
जो अंजानों को अपना बनाती,
जो पड़ोसियों को परिचित बनाती,
जो भाईचारे में रहना सिखाती,
वह ज़ुबान है हिंदी...

जिसमें होते सभी स्वप्न पूरे,
जिसमें मिले मंजिल संपूर्ण,
जिसमें जगे जनता की आस,
जिसमें बढ़े स्वयं पर विश्वास,
वह ज़ुबान है हिंदी...

सभी सुखों का गीत हो जिसमें,
सात सुरों का संगीत हो जिसमें,
कालीदास की रीत हो जिसमें,
दुष्यंत-शकुंतला सी प्रीत हो जिसमें,
वह ज़ुबान है हिंदी...

पी.डी.के.वी. अकोला (P.D.K.V. Akola)

जे. पी. कावरे
बुलियन लेखापाल

पिछली गर्मी में मैं अपने गाँव अमरावती गया था, तो मेरे एक पारिवारिक मित्र श्री संदीप जी काले, जो गायत्री प्रतिष्ठान के सदस्य हैं, उनका फोन आया और कहा, 'आप अकोला घूमने आ जाइए।' मैं अकोला चला गया, जहाँ महीना मई का था और तापमान 48 डिग्री सेल्सियस! सोचा यहाँ क्या होगा घुमने जैसा? लेकिन संदीप जी ने सायंकाल के समय मुझे एक भव्य, दिव्य व ऐतिहासिक वास्तू दर्शन करवाया जिसका नाम है पीडीकेवी। उन्होंने बड़ी आत्मीयता से PDKV का महत्वपूर्ण 200 एकड़ परिसर दिखाया और हर वस्तु, वास्तु, कार्यालय, विभाग, स्तंभ का वर्णन हमारी वाणी अर्थात मातृभाषा में किया जिसका जिक्र मै इस लेख में कर रहा हूँ!

भारत के महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में अकोला में स्थित एक कृषि विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय को कृषि शिक्षा, अनुसंधान और विस्तार शिक्षा के साथ-साथ ब्रीडर और फाउंडेशन बीज कार्यक्रमों की जिम्मेदारी सौंपी गई है। जिसका नाम PDKV यानी डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ है। इसके अंतर्गत विदर्भ के सभी ग्यारह जिले अकोला, अमरावती, भंडारा, बुलढाणा, चंद्रपुर, गढ़चिरौली, गोंदिया, नागपुर, वाशिम, वर्धा और यवतमाल शामिल हैं, जिसका केंद्रीय परिसर अकोला में है!

इतिहास: 1960 के दशक के मध्य में, महाराष्ट्र सरकार ने कृषि विश्वविद्यालय स्थापित करने का निर्णय लिया। ऐसा एक स्थान विदर्भ के अकोला में था, जहां 1905 से पहले ही एक कृषि महाविद्यालय कार्यरत था। हालांकि, पश्चिमी महाराष्ट्र के नेताओं ने इसे पश्चिमी महाराष्ट्र के राहुरी में स्थानांतरित करने के लिए महाराष्ट्र सरकार पर दबाव डाला। परिणामस्वरूप, महाराष्ट्र सरकार ने राज्य कृषि को स्थानांतरित कर दिया। 1966 के अंत तक विश्वविद्यालय पश्चिमी महाराष्ट्र के राहुरी में स्थानांतरित हुआ।

इसके कारण अकोला में अभूतपूर्व छात्र विरोध प्रदर्शन हुआ और विदर्भ के नागरिकों ने भी इसका विरोध किया। स्मरणीय है कि 1 नवंबर 1956 को, विदर्भ के आठ ज़िलों वाले मध्य प्रदेश के एक हिस्से को स्थानीय लोगों की इच्छाओं और राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिशों के कारण तत्कालीन बॉम्बे राज्य में मिला दिया गया था, जिसे बाद में बदल दिया गया। विदर्भ के लोगों ने इस विलय का विरोध किया, और कृषि विश्वविद्यालय को अकोला से राहुरी में स्थानांतरित करने का, जानबूझकर भेदभाव और पक्षपात करने वाली साजिश का विरोध किया। इस कारण 17 अगस्त 1967 को अकोला में हज़ारों लोगों ने सरकार के इस फैसले के खिलाफ प्रदर्शन किया जिसके परिणामस्वरूप छात्रों का व्यापक हिंसक आंदोलन हुआ जिसमें पुलिस की गोली से 9 छात्रों की मौत हो गयी। जिनका हुतात्मा स्तंभ कृषि विश्वविद्यालय के परिसर मे स्मृति चिह्न के तौर पर आज भी है! (कृषि विश्वविद्यालय के लिए उस समय छात्रों ने अपनी जान दी यह भी एक सोचने वाली बात है!)

अंततः अकोला में कृषि विश्वविद्यालय 20 अक्टूबर 1969 को शुरू किया गया। इसका नाम विदर्भ (अमरावती) के प्रसिद्ध पुत्र डॉ. पंजाबराव (उर्फ भाऊसाहेब) देशमुख, जो भारत सरकार के प्रथम कृषि मंत्री थे, इनके नाम पर पंजाबराव कृषि विद्यापीठ रखा गया। 15 नवंबर 1995 से इसका नाम बदलकर डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ कर दिया गया।

शोध करना: विश्वविद्यालय के पास बीज की गुणवत्ता कार्यक्रम के अलावा विभिन्न अनुसंधान, क्षेत्रीय परीक्षण करने के लिए कुल 3425 हेक्टेयर से अधिक कृषि योग्य भूमि है। यह विश्वविद्यालय पूर्व के आर्द्र चावल क्षेत्र से लेकर धीरे-धीरे पश्चिम के शुष्क कपास और बाजरा क्षेत्र तक समाप्त होने वाले जलवायु क्षेत्रों की एक विस्तृत श्रृंखला की आवश्यकता को पूरा करता है। इसी प्रकार इसके उत्तरी जिले भारत में गेहूं की खेती के लिए दक्षिणी सीमा बनाते हैं। अतीत में इस विश्वविद्यालय ने विशेष रूप से कपास (पीकेवी-2 कपास संकर), ज्वार (खरीफ संकर), दालें (टीएयू- काले चने की श्रृंखला), तिलहन (टीएजी-24 मूंगफली किस्म; कुछ अलसी किस्मों) में अनुसंधान कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वॉटरशेड प्रबंधन, शुष्क भूमि प्रबंधन, और मंदारिन संतरे की खेती, इत्यादि प्रयोग होते हैं ।

छात्र कल्याण: छात्र कल्याण निदेशक छात्रों के कल्याण के लिए निम्नलिखित गतिविधियों की देखरेख करते हैं। विश्वविद्यालय स्तर पर छात्रों के बीच विभिन्न खेल, खेल और सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों को बढ़ावा देना और विकसित करना। खेल भावना को बढ़ावा देना और विश्वविद्यालय के अधिकार क्षेत्र के भीतर अंतर कॉलेज टूर्नामेंट आयोजित करना।

शैक्षणिक: पीडीकेवी कृषि विज्ञान और कृषि इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी में स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट डिग्री प्रदान करता है। सभी डिग्री, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट डिग्री कार्यक्रमों में प्रवेश एमसीएईआर, पुणे के माध्यम से किया जाता है। आदिवासी जिले गढ़चिरौली में नया कृषि महाविद्यालय खोला गया है। इस शिक्षा के लिए बुलढाना, हिवारा, मुल-मरोदा, निंबी, सवांगी और वरुड में पांच कृषि विद्यालय भी स्थित हैं।

डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विश्वविद्यालय में किसानों को आवश्यक सर्वोत्तम वर्तमान ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से कई विभाग हैं। कृषिविज्ञान, कृषि कीट विज्ञान, कृषि वनस्पति विज्ञान (आनुवंशिकी और पादप प्रजनन, फसल शरीर क्रिया विज्ञान, बीज प्रौद्योगिकी, कृषि जैव प्रौद्योगिकी), मृदा विज्ञान, कृषि अर्थशास्त्र और सांख्यिकी, विस्तार शिक्षा, कृषि इंजीनियरिंग, पशुपालन एवं डेयरी विज्ञान, प्लांट पैथोलॉजी इत्यादि के यहाँ शोध कार्य किये जाते हैं।

डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ प्रथम कुलपति थे श्री. एल.एन. बोंगिरवार (1-7-1969 से 9-10-1972) व वर्तमान मे (2023-24) में श्री. डॉ. एस. आर. गडाख (कृषिविज्ञानी) है।

अंत में कहना चाहूँगा कि, डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ अकोला का 200 एकड़ क्षेत्र व वास्तु सच में एक निसर्गरम्य भूमि हैं जहां से भारत को उचित भावना से कृषिप्रधान देश बनाने का महत्वपूर्ण कार्य निरंतर रूप से हो रहा है!

:: सुभाषित ::

कस्यैकान्तं सुखम् उपनतं, दु:खम् एकान्त तो वा।
नीचैर्गच्छति उपरि च, दशा चक्रनेमिक्रमेण?

अर्थ: किसने केवल सुख ही देखा है और किसने केवल दु:ख ही देखा है, जीवन की दशा एक चलते पहिये के घेरे की तरह है जो क्रम से ऊपर और नीचे जाता रहता है।

पुरेन्द्र सी. दूबे
वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक

टकसाल - मेरी पहचान...

रोज सुबह खुद को नींद से जगाना,

तैयार होकर दफ्तर की ओर कदम बढ़ाना,

हिम्मत जुटाके लोकल ट्रेन में जो चढ़े,

पूरी यात्रा करनी पड़ी खड़े- खड़े,

जैसे-तैसे पहुँचे दफ्तर, फिर आई पंचिंग की बारी,

और खुल गई धातु-परीक्षण की लैब हमारी,

फिर हुआ, लैब में केमिकल का खेल,

नाइट्रिक और एचसीएस का आपस में मेल,

कहीं सिक्के तो कहीं सोने-चाँदी की जाँच,

फायर-पुस्से और भट्टी की गर्म आँच,

कोई चमकाता सोना तो कोई करता सिल्वर शाइनिंग,

मानी जानी हैं अपनी गोल्ड-सिल्वर रिफाईनिंग,

कहीं सिक्के की छपाई, कहीं मशीन की आवाज,

हम सभी को है, अपनी टकसाल पर नाज,

मेरा दफ्तर ही मेरी आन-बान-शान है,

टकसाल ही मेरी पहचान है, टकसाल ही मेरी पहचान है।

के. राजशेखर नायडू
कक्षा-4
S/o. टी. स्वप्ना कुमारी
बुलियन लेखापाल

अभी तक बारिश नहीं हुई ?

अभी तक बारिश नहीं हुई ?
ओह! घर के सामने का पेड़ कट गया ?
कहीं यही कारण तो नहीं।
अभी तक बारिश नहीं हुई?

बगुले झुँड में लौटते हुए, संध्या के आकाश में
बहुत दिनों से नहीं दिखे
एक बगुला भी नहीं दिखा
कहीं यही कारण तो नहीं।
अभी तक बारिश नहीं हुई?

बचे हुए समीप के तालाब
का थोड़ा सा जल भी सूख गया।
कहीं यही कारण तो नहीं।
अभी तक बारिश नहीं हुई?

जुलाई हो गई पानी अभी तक नहीं गिरा।
पिछली जुलाई में जंगल जितने बचे थे।
अब उतने नहीं बचे
कहीं यही कारण तो नहीं।
अभी तक बारिश नहीं हुई?

आदिवासी.. पेड़ तुम्हें छोडकर नहीं गए
और तुम भी जंगल छोडकर खुद नहीं गए
शहर के फुटपाथों पर अर्ध नंगे बच्चे-परिवार के साथ जाते दिखे
इस साल कहीं यही कारण तो नहीं।
अभी तक बारिश नहीं हुई?

इस साल का भी अंत हो गया
परन्तु परिवार के झुंड में अबकी बार छोटे-छोटे बच्चे नहीं दिखे
कहीं यही कारण तो नहीं।
अभी तक बारिश नहीं हुई?

प्रकृति के पंच तत्व

अंशुल कुमार
कनिष्ठ कार्यालय सहायक

प्रकृति भगवान की बनायी हुई सबसे अद्भूत कलाकृति है जो उसने बहुमूल्य उपहार के रुप में प्रदान की है। प्रकृति सब कुछ है जो हमारे आसपास है जैसे पानी, हवा, भूमि, पेड़, जंगल, पहाड़, नदी, सूरज, चाँद, आकाश, समुद्र आदि। कुदरत अनगिनत रंगों से भरी हुई है जिसने अपनी गोद में सजीव-निर्जीव सभी को समाहित किया है। जो दृश्यमान जगत या जिससे यह जगत बना है वह प्रकृति है। मनुष्य आज के इस आधुनिक युग में प्रकृति को साधारण और तुच्छ समझने लगा है क्योंकि प्रकृति हर जगह मौजूद है इसलिए लोग इसे आसानी से मिलने वाली एक तुच्छ वस्तु समझने लगे है। लेकिन प्राकृतिक पर्यावरण है जो हमारे आसपास है हमारा ध्यान रखती है और हर पल हमारा पालन-पोषण करती है ये हमारे चारों तरफ एक सुरक्षात्मक कवच प्रदान करती है जो हमें नुकसान से बचाती है। हवा, पानी, जमीन, आग, आकाश आदि जैसी प्रकृति के बिना हम लोग इस काबिल नहीं है कि धरती पर रह सके।

* प्रकृति का सौन्दर्य

हर सुबह एक सुंदर सूर्योदय होता है, पौधों पर पानी की बूंदें मोती की तरह दिखाई देती है और चहकते हुए पक्षी, एक खूबसूरत साफ नीला आकाश ये खूबसूरत चीजें प्रकृति से संबंधित हैं। प्रकृति की विशाल सुंदरता मानवता के लिए आशीर्वाद से भरी है। बहती हुई नदियाँ, गगनभेदी ध्वनि, बहती हुई हवाएँ, कल-कल करते झरने, जीवंतफूल और ऊंचे पहाड़ ये प्राकृतिक सुदरताओं की चार चाँद लगा देती है। प्रकृति हमारे जीवन को वास्तविक आनंद, अच्छाइयाँ और खुशियों से भर देती है। प्रकृति प्रेमी के लिए, पृथ्वी का प्रत्येक वस्तु किसी व्यक्ति की तरह जीवित है। ये प्राकृतिक सुंदरताएँ हमें न केवल दृष्टि रूप से खुश करती हैं। प्रकृति की सुंदरताएं अनंत हैं। **'प्रकृति एक आत्मा है।'**

* पंच तत्व

'मनुष्य का शरीर पंच तत्वो से मिलकर बना है प्रकृति के माध्यम से पाँच तत्व मनुष्य को जीवन में कठिन परिश्रम करके लक्ष्य को प्राप्त करना सिखाते है'

1. जल : जल के रूप में प्रकृति सिखाती है आगे बढ़ना

जल के रूप में प्रकृति **'प्रगति और प्रवाह'** की ककहरा सिखाती है। पानी बताता है कि हमें हर बाधा को पार करते हुए चलना है

जैसे नदी चलती है पत्थरों, अवरोधों में, कभी रूक कर, कभी सकुचा कर तो विराट धर कर, कभी सीधी तो कभी राह बदल बदल कर बहती है तथा जिस प्रकार समुद्र में लहरें बार-बार किनारों से बाहर निकलने कि कोशिश में निरन्तर प्रयास करती रहती है। उसी तरह मनुष्य को किसी भी कठिन परिस्थिति में हार नही माननी चाहिए जब तक की उसको अपने लक्ष्य की प्राप्ति न हो।

2. वायु : 'वायु के रूप में प्रकृति सीमाओं के अन्दर चलना सिखाती है'

वायु के रूप में प्रकृति सीख, देती है **'सीमाओं में रहकर जीने की'** जिससे जीवन चलता रहे, न हो कोई अनर्थ जैसे कि वायु जब अपनी सीमा तोड़ती है तो आंधी बन जाती है। मनुष्य जब सीमा तोड़ता है तो जीवन में भूचाल आ जाता है। उसको कुछ नही दिखाई देता है।

3. पृथ्वी : 'प्रकृति सिखाती है धरा की तरह धैर्य रखने और दृढ़ता की शिक्षा देती है'

धरा की तरह **धैर्य** और **दृढ़ता** रखने की शिक्षा देती है पृथ्वी सीख देती है कि डटे रहो। धैर्य मत त्यागो स्थिर रहना पृथ्वी का गुण है। अपने लक्ष्य और निर्णय पर अडिग रहने का व्यक्तित्व का आधार है। जब तक अपने लक्ष्य की प्राप्ति न हो।

4. आग: आग के रूप में प्रकृति सिखाती है कि अपनी ऊर्जा का सही उपयोग करना और अति उत्साही न होना

आग यानी **'ऊर्जा'** आग का पैमाना बिगड़ा तो दावानल होता है। इसी तरह किसी भी कार्य में अति उत्साह या ज्यादा ऊर्जा लगाना उस काम को बिगाड़ देता है। खाना बनाने के लिए ऊर्जा की मात्रा भी अलग-अलग होती है। इसी तरह हमें यह सीखना होगा कि कहाँ कितनी ऊर्जा निवेश करें।

5. आकाश : 'प्रकृति सिखाती है, आकाश में खुलकर उड़ना, लेकिन कभी न भटकना'

आकाश का अर्थ है **'विस्तार'** जीवन को आसमान जितना विस्तार देना संभव है यह उम्मीद हमें आकाश को देख कर मिलती है। विज्ञान कहता है कि ग्रह गुरुत्वाकर्षण बल के कारण एक नियम में बंधे हुए हैं। इसी तरह आकाश जितना विस्तार पाते हुए हम भटक न जाए इसलिए जरूरी है कि हम अपने उद्देश्य को न भूलें।

सफलता से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण है, असफलता

अमित भास्करराव कौलकार
कनिष्ठ कार्यालय सहायक

सभी के जीवन में एक समय ऐसा आता है जब सभी चीज़ें आपके विरोध में हो रहीं हों और हर तरफ से निराशा मिल रही हो चाहे आप एक प्रोग्रामर है या कुछ और, आप जीवन के उस मोड़ पर खड़े होते हैं, जहाँ सब कुछ गलत होता लगता है। अब चाहे ये कोई सॉफ्टवेर हो सकता है जिसे सभी ने रिजेक्ट कर दिया हो, या आपका कोई फ़ैसला हो सकता है जो बहुत ही भयानक साबित हुआ हो।

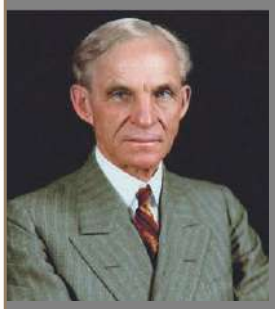

समस्या को हल करने की तुलना में अधिकतर लोग ज्यादा समय और ताकत उस से जूझने में लगा देते हैं।

'Most people spend more time and energy going around problems than in trying to solve them.'

- Henry Ford

लेकिन सही मायने में, विफलता सफलता से ज़्यादा महत्वपूर्ण होती है। हमारे इतिहास में जितने भी बिज़निसमैन, वैज्ञानिक और महापुरुष हुए हैं, वो जीवन में सफल बनने से पहले लगातार कई बार फेल हुए हैं। जब हम बहुत सारे काम कर रहे हों तो यह ज़रूरी नहीं कि सब कुछ सही ही होगा लेकिन अगर आप इस वजह से प्रयास करना छोड़ देंगे तो कभी सफल नहीं हो सकते।

हेनरी फ़ोर्ड, जो बिलियनेयर और विश्वप्रसिद्ध फ़ोर्ड मोटर कंपनी के मालिक हैं, सफल बनने से पहले पाँच अन्य बिज़निस मे फेल हुए थे। कोई और होता तो पाँच बार अलग-अलग बिज़निस में फेल होने और कर्ज़ मे डूबने के कारण टूट जाता- लेकिन फ़ोर्ड ने ऐसा नहीं किया और आज एक बिलियेनर कंपनी के मालिक हैं।

थॉमस अल्वा एडिसन का नाम तो सब जानते ही है। लाइट बल्ब बनाने से पहले उन्होने लगभग 1000 विफल प्रयोग किए थे।

अल्बेर्ट आइनस्टाइन जो 4 साल की उम्र तक कुछ बोल नहीं पाते थे और 7 साल की उम्र तक निरक्षर थे, लोग उनको दिमागी रूप से कमज़ोर मानते थे लेकिन अपनी थियोरी और सिद्धांतों के बल पर वे दुनिया के सबसे बड़े वैज्ञानिक बन गए।

अब जरा सोचिए कि अगर हेनरी फ़ोर्ड पाँच बिज़नेस में फेल होने के बाद निराश होकर बैठ जाते, या एडिसन 999 असफल प्रयोगों के बाद उम्मीद छोड़ देते और आइनस्टाईन भी खुद को दिमागी रूप से कमजोर मान के बैठ जाते तो क्या होता?

हम बहुत सी महान प्रतिभाओं और आविष्कारों से अंजान रह जातें।

तो मित्रों, असफलता सफलता से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण है।

असफलता ही इंसान को सफलता का मार्ग दिखाती है। किसी महापुरुष ने बात कही है कि-

"Winners never quit and quitters never win"

'जीतने वाले कभी हार नहीं मानते और हार मानने वाले कभी जीत नहीं सकते।'

अगर किसी काम में असफल हो भी गए तो क्या हुआ ये अंत तो नहीं है न, फिर से कोशिश करें, क्योंकि कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

मित्रों असफलता तो सफलता की एक शुरुआत है, इससे घबराना नहीं चाहिये बल्कि पूरे जोश के साथ फिर से प्रयास करना चाहिये।

बेटियां

विजयशंकर मौर्य
टेक्नीशियन ग्रेड 1 (फिटर)

ऐसी होती हैं बेटियां!

जो होश सम्भालते ही जान लेती हैं, अपने प्रति दुनिया का नजरिया।
या वो, भांपने लगती हैं पल-पल लोगों की नजरों में छिपा तिरस्कार।
ऐसी होती हैं बेटियां!

जो गुम कर देती हैं, अपना बचपन चूल्हे की आग और चौके की माप में,
और सिर पर बोझ ले लेती हैं परिवार की पुश्तैनी फिकरों का।
ऐसी होती हैं बेटियां!

जिनकी अपनी कोई इच्छा नहीं होती हैं, जिनकी चुप्पी होती हैं संस्कार उनका,
झुकी निगाहें और मुट्ठी में कुछ रेखायें, बांधती जाती हैं सिर्फ स्वीकार की गाठें।
ऐसी होती हैं बेटियां!

जो पौधे सी यहां से उखाड़कर वहां रोप दी जाती हैं।
दो घरों में उजाला कर भी खुद अंधेरी रह जाती हैं।
सांचे में ढलते-ढलते मोम की गुड़िया बन जाती हैं,
कर्तव्य की उंगली थामें कांटो की चुभन सह जाती है।
ऐसी होती हैं बेटियां!

लक्ष्मी होकर भी, लक्ष्मी बिन नहीं ब्याही जाती हैं।
बिना मोल-तोल रिश्तों में न बांधी जाती हैं, न निबाही जाती हैं।
कभी रौशन होने से पहले ही बुझा दी जाती हैं,
कभी दहेज के नाम पर जला दी जाती हैं।
भय से आंतकित होने के बाद निर्भया कहलाती हैं।
ऐसी होती हैं बेटियां!

सुभद्रा कुमारी चौहान: हिन्दी साहित्य की राष्ट्र कवयित्री

नितिन म. चाफले
वरिष्ठ कार्यालय सहायक

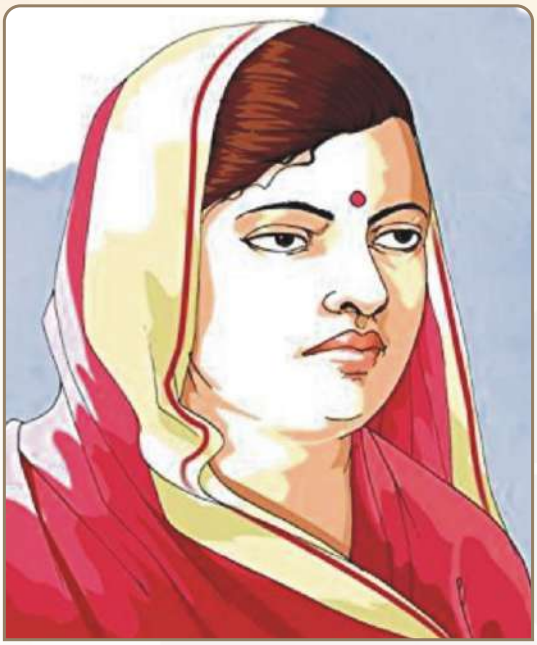

'बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी'

शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसने अपने बचपन में यह कविता न सुनी हो। स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस आदि अवसरों पर देशभक्तों एवं उनके बलिदान को याद करते समय 'झांसी की रानी' की यह कविता अवश्य याद आती है। इस कविता को लिखने वाली, सबके मन-मन में बसने वाली लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान उन लेखिकाओं में से हैं जिन्होंने राष्ट्रीयता के विषय पर लिखा और आज़ादी की लड़ाई में अपना भरपूर योगदान दिया।

16 अगस्त, 1904 को उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद में जन्मी 'सुभद्रा' का व्यक्तित्व इतना पारखी और देशभक्ति से परिपूर्ण था कि नौ साल की छोटी सी उम्र में ही उन्होंने कविताएं लिखना शुरू कर दिया। बहुत कम समय में सुभद्रा जी ने हिन्दी साहित्य में अपनी पहचान बना ली। किसी भी लेखक अथवा लेखिका को समझने के लिए, उनके दौर की सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों को समझना आवश्यक होता है। जिस समय सुभद्रा कुमारी चौहान लिख रही थी, उस समय आज़ादी की लड़ाई अपने परवान पर थी। भारत के लोगों का केवल एक उद्देश्य था, अंग्रेजों के शासन से मुक्त होना और एक स्वतंत्र भारत में निवास करना। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जनता को साथ लाना तथा उन्हें आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा लेने के लिए उत्साहित एवं प्रेरित करना आवश्यक था। सुभद्रा कुमारी चौहान ने यह भूमिका बड़े ही अनोखे ढंग से निभाई। उन्होंने देशभक्ति की निर्भीक अभिव्यक्ति से साहित्य एवं राजनीति में खास जगह बनाई। कहा जाता है कि हिन्दी साहित्य के 'राष्ट्रकवि' की उपाधि पाने वाले रामधारी सिंह दिनकर जी ने भी सुभद्रा जी की कविताओं से ही प्रेरित होकर राष्ट्रभक्ति की कविताएं लिखी, जो आज भी हम सबको राष्ट्र के लिए बलिदान तथा त्याग करने के लिए प्रेरित करती हैं।

उस समय देश में गांधी जी के नेतृत्व में आंदोलन चल रहे थे। गांधी जी के आह्वान पर स्वतंत्रता आंदोलन में सम्मिलित होने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान पर गांधी जी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांत का गहरा प्रभाव पड़ा तथा 'झांसी की रानी' को अपना आदर्श मानने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान ने अहिंसात्मक आंदोलन पर बल देना प्रारंभ किया। अतः इनका समस्त साहित्य तथा रचनाएँ अहिंसा और हिंसा के सामंजस्य के साथ स्वतन्त्रता प्राप्त करने पर आधारित है।

सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी की राष्ट्रीय काव्य धारा की प्रमुख कवयित्री हैं। उनकी सृजनात्मक क्षमता केवल नौ वर्षों की

आयु में उस समय दृष्टिगत हो गई थी जब उनकी प्रथम कविता, 'नीम' उस समय की प्रसिद्ध पत्रिका 'मर्यादा' में प्रकाशित हुई थी। इस प्रथम प्रकाशित रचना में सुभद्रा कुमारी चौहान 'नीम' का गुणगान करती हैं और ईश्वर से प्रार्थना करती हैं कि जब तक धरती पर जीवन है, तब तक नीम जैसी गुणकारी औषधि भारत में बढ़ती रहनी चाहिए:

''प्रार्थना हरि से करूँ, हिय में सदा यह आशा हो,
जब तक रहें नभ, चंद्र तारे सूर्य का परकास हो।
तब तक हमारे देश में तुम सर्वदा फूलो करो,
निज वायु शीतल से पथिक जन का हृदय शीतल करो।''

9 वर्ष की छोटी सी उम्र में इतनी उत्कृष्ट और पारखी सोच के साथ कविता लिखना उनके परिपक्व व्यक्तित्व तथा काव्यशील संवेदना को दर्शाता है।

सुभद्रा कुमारी चौहान जी की राष्ट्रीय तथा राजनीतिक चेतना इतनी प्रखर थी कि वह तमाम राजनीतिक कदमों तथा रणनीतियों को समझती तथा अपनी कविताओं के माध्यम से उनकी अभिव्यक्ति भी करती थी। हम सब जानते हैं कि भारत ने अपनी पहली स्वतन्त्रता की लड़ाई सन सत्तावन में लड़ी। लेकिन देशद्रोहियों तथा भारत के लोगों के मध्य एकता के अभाव में हमें स्वतन्त्रता से हाथ धोने पड़े और भारत कंपनी शासन से हटकर अंग्रेज़ी शासन में आ गया। वह अपनी रचना 'तांगेवाले' में इसकी अभिव्यक्ति करते हुए कहती हैं कि 'सन सत्तावन के गदर में अगर हिंदुस्तानियों में एका होता तो पाँसा ही पलट जाता।'

जलियाँ वाला बाग के नृशंस हत्याकांड के बारे में सुनकर सभी का दिल दहल गया। इसका सुभद्रा कुमारी जी पर गहरा प्रभाव पड़ा और इसी के संदर्भ में वह लिखती हैं:

''मुझे कहा कविता लिखने को,
लिखने बैठी मैं तत्काल।

पहले लिखा 'जालियाँ वाला',
कहा कि बस, हो गए निहाल।

तुम्हें और कुछ नहीं सूझता,
ले-देकर वह खूनी बाग,
रोने से अब क्या होता है,
धुल न सकेगा उसका दाग।''

राष्ट्रीय काव्यधारा के अधिकांश कवियों ने देश के नौजवानों में राष्ट्रचेतना जागृत करने के लिए देश के अतीत गौरव के गीत गाये तो किसी ने रूढ़ व्यवस्थाओं में बदलाव लाने का आह्वान किया, किन्तु सुभद्राजी की राष्ट्रीय चेतना इन सबसे भिन्न थी, उसमें उत्तेजना थी, आत्म-सम्मान का भाव था।

उस समय में एक स्त्री का राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेना तथा साहित्य के जगत में एक राष्ट्रीय कवयित्री के रूप में अपनी पहचान बनाना बहुत बड़ी बात थी। सुभद्रा कुमारी चौहान जी का व्यक्तित्व न सिर्फ़ स्त्रियों के लिए प्रेरणा है, बल्कि इस देश के समस्त नागरिकों के लिए भी अनुसरणीय है।

राजभाषा उत्थान में तकनीकी की भूमिका

श्रीमती कविता सं मोरे
वरिष्ठ कार्यालय सहायक

हमारे देश में कंप्यूटरीकरण की शुरुआत लगभग 80 के दशक में हुई। उस समय केवलशोध संस्थानों में ही कम्प्यूटर का प्रयोग अधिक होता था। जैसे-जैसे कम्प्यूटर की उपयोगिता जीवन के अन्य क्षेत्रों में दिखाई देने लगी, उसका प्रयोग कार्यालयों में भी बढ़ने लगा। शुरूआत में कम्प्यूटर पर काम करने की भाषा केवल अंग्रेज़ी ही थी, अत: कम्प्यूटरीकरण के शुरूआती दौर में कार्यालयों में अंग्रेजी का प्रयोग खूब बढ़ा, लेकिन धीरे-धीरे बदलती और उन्नत होती तकनीकी ने इसे हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं में भी संभव कर दिया। शुरूआती दौर में हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं में काम करने के उत्सुक लोगों को एक प्रकार की कठिनाई का सामना करना पड़ता था किन्तु आज यह स्थिति नहीं है, अब हमारे पास हिन्दी में काम न करने का कोई कारण या बहाना नहीं बचा है। हमारे कार्यालयों में जो कार्य किए जाते हैं, उनके साथ-साथ राजभाषा नीति का अनुपालन करने के लिए हिन्दी में काम करने की शैली और सुविधा का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:

(1) यूनिकोड:

हिंदी टाइपिंग में यूनिकोड के आ जाने के बाद हमारे देश में हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं में टाइपिंग के मामले में क्रांति आ गई है। पहले टाईप करने का कार्य केवल टाइपिस्ट का होता था। आज लिपिक से लेकर महाप्रबंधक/निदेशक/महानिदेशक स्तर के अधिकारी यूनिकोड के माध्यम से सहजता से टाइपिंग कर पा रहे हैं। पुराने प्रकार के फॉन्ट जिस पर टाइपिंग सीखने के बाद अभ्यास करना पड़ता था और स्पीड आने में महीनों लग जाते थे, अब फोनेटिक की-बोर्ड की मदद से वही कार्य कुछ महीनों की जगह कुछ घंटो में भी किया जा सकता है। परंपरागत प्रकार के फॉन्ट में जो समस्याएं थीं, यूनिकोड फॉन्ट के आने से इन सबका निवारण कर लिया गया है। अब यूनिकोड फॉन्ट में हिंदी में टाईप की गई सामग्री अन्य किसी भी फॉन्ट अथवा कम्प्यूटर में समान प्रकार से उपलब्ध रहेगी। इस प्रकार यूनिकोड तकनीकी को अपनाने से बड़ी संख्या में लोगों को कम्प्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित किया गया है। अब स्थिति यह है कि 15 वर्ष पहले तक जो लोग कम्प्यूटर सीखने और हिंदी में काम करने से बचते थे, वही आगे बढ़कर स्वतः कम्प्यूटर भी सीख रहे हैं और उसमें हिन्दी भाषा में काम करना भी। आज के समय में प्रौद्योगिकी इतनी विकसित हो चुकी हैं कि यदि लोगों को मात्र कम्प्यूटर पर हिंदी में काम करने के संबंध में जागरूक भी कर दिया जाए तो वे शेष कार्य खुद से करने लगेंगे। सरकारी कार्यालयों में कम्प्यूटर पर हिंदी में काम करने संबंधी अभियान को गति मिली है। आज देश में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन इतना तेज़ी से बढ़ाने में हिंदी यूनिकोड की सबसे बड़ा योगदान है। देश भर में सभी स्तर के अधिकारी /कर्मचारी अपने कार्य के लिए किसी टाइपिस्ट पर आश्रित न रहकर खुद से अपना कार्य कर पा रहे हैं। यूनिकोड ने कम्प्यूटर पर हिंदी को अंग्रेज़ी के समान ही सशक्त बना दिया है। अब तकनीकी यहां तक विकसित हो गई है कि मात्र बोलकर शतप्रतिशत शुद्धता के साथ टाइपिंग करना संभव हो गया है। यह संभव बनाया गया है गूगल वाइस टाइपिंग और अन्य ऐसे माध्यमों द्वारा। इसमें बड़ी आसानी से इंटरनेट के प्रयोग से स्मार्ट फोन, कम्प्यूटर व अन्य इलेकट्रॉनिक उपकरणों पर हिंदी में बड़ी आसानी से बोल कर टाइपिंग की जा सकती है। भारत सरकार ने केंद्रीय सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी में काम करने के लिए यूनिकोड तकनीकी में काम करने को अनिवार्य बनाया है।

(2) हिंदी अनुवाद:

केंद्र सरकार के कार्यालयों में लागू राजभाषा नीति के अनुसार हमारे देश के बड़े हिस्से में शत-प्रतिशत कार्यालयीन कार्य हिंदी से ही करना अनिवार्य किया गया है। ऐसे कार्यों को करने के लिए बड़ी संख्या में कुशल और प्रशिक्षित अनुवादकों की आवश्यकता होती है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए नियमों के अनुसार केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय में प्रत्येक 25 अनुसचीवीय कार्मिकों पर एक हिंदी अनुवादक भर्ती का नियम बनाया गया है। राजभाषा नीति में इस बात पर भी बल दिया गया कि मूल रूप से सारा कार्य हिंदी में ही किया जाए। अनुवादकों पर अधिक आश्रित न रहकर उनसे मात्र सहायता ली जाए। इस वजह से अंग्रेज़ी में काम करने के अभ्यस्त अधिकारियों/कर्मचारियों को विकल्प के तौर पर मशीन अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है। इनमें गूगल अनुवाद सेवाएं सबसे अधिक लोकप्रिय है। इसके बाद दूसरा स्थान सीडैक द्वारा विकसित 'मंत्रा' मशीन अनुवाद प्रणाली का है। लोक सभा व राज्य सभा में सत्र के दौरान संसद की कार्यवाही को हिंदी में करने के लिए मशीन अनुवाद की सहायता लेना अनिवार्य हो जाता है। निश्चय ही मशीन अनुवाद की मदद से कार्यालयों में राजभाषा हिंदी में काम-काज बहुत तेजी से बढ़ रहा है। मशीन अनुवाद की मदद से धारा 3(3) जैसे नियमों के अनुपालन में बड़ी मदद मिल रही है। गूगल अनुवाद और मंत्रा मशीन अनुवाद हमारे देश की प्रमुख अनुवाद प्रणालियां हैं। गूगल अनुवाद वर्तमान में दुनिया की 106 भाषा युग्मों में परस्पर अनुवाद की सुविधा देता है। हालांकि इसकी अनुवाद गुणवत्ता पर अभी इतना विश्वास नहीं किया जा सकता लेकिन छोटे-छोटे वाक्य या पदबंध या एक शब्द का अच्छा अनुवाद प्राप्त हो जाता है।

(3) हिंदी शिक्षण में:

संविधान की धारा 344 के अनुसार वर्ष 1955 में गठित राजभाषा आयोग की सिफारिशों पर जारी राष्ट्रपति महोदय के आदेश 1960 में स्पष्ट किया गया है कि ''केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय में कार्यरत अधिकारी/कर्मचारी जिनको हिंदी में काम करने का ज्ञान नहीं है, के लिए सेवा-कालिक प्रशिक्षण लेना अनिवार्य कर है।'' इस प्रशिक्षण में पास होने पर एक वेतनवृद्धि के बराबर पुरस्कार भी दिया जाएगा। प्रशिक्षण की व्यवस्था बड़े

शहरों में ही होने की वजह से छोटे शहरों के कार्यालयों में कार्यरत अधिकारी /कर्मचारी प्रशिक्षण की व्यवस्था का लाभ उठाने में पीछे रह जाते हैं। हिंदी प्रशिक्षण के लिए भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा लीला नाम से एक ऑनलाइन पोर्टल विकसित किया गया था। यह प्रमुख भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी सिखाने के लिए एक प्लेटफार्म है। इसमें हिंदी के अक्षर ज्ञान, उसके उच्चारण से लेकर पत्र लेखन तक का संपूर्ण अभ्यास करवाया जाता है। इसकी मदद से बहुत से लोग आसानी से हिंदी सीख पाते हैं। जैसे-जैसे देश में हिंदी में प्रशिक्षित अधिकारी/कर्मचारी बढ़ते जा रहे हैं, वैसे-वैसे राजभाषा में कार्य भी बढ़ता जा रहा है। पहले की अपेक्षा सभी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन मजबूत हुआ है। विभिन्न तकनीकी माध्यमों से उपलब्ध प्रशिक्षण सामग्री की वजह से राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ाने में सहायता मिली है। भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा विकसित लीला सॉफ्टवेयर की मदद से किसी भी भारतीय भाषा में पारंगत किया जा सकता है।

(4) हिंदी आशुलिपिक:

भाषाई क्षेत्र में तकनीकी के बढ़ते प्रयोग ने इस क्षेत्र को बहुत विकसित किया है। प्रत्येक कार्यालय में एक निश्चित अनुपात में हिंदी आशुलिपिकों की भर्ती अनिवार्य की गई। फिर भी प्रत्येक स्तर के अधिकारी को हिंदी आशुलिपिक की सेवाएं सुलभ नहीं हो पाती। कुछ समय पहले तक कार्यालयों में आशुलिपिक अधिकारी

से डिक्टेशन लेकर उसे हिंदी या अंग्रेजी में हाथ से लिखते थे या सीधे कम्प्यूटर /टाईप मशीन पर बैठकर पत्र का मसौदा तैयार कर प्रस्तुत करते थे। यह एक श्रम साध्य और समय साध्य प्रक्रिया थी। परंतु आज के दौर में तकनीकी के बढ़ते प्रभाव ने प्रायः आशुलिपिकों की आवश्यकता को कम कर दिया है। गुगल के भाषा प्रौद्योगिकी उत्पादों की मदद से स्पीच टू टेक्स्ट सॉफ्टवेयर और टेक्स्ट टू स्पीच सॉफ्टवेयर विकसित किए जा चुके हैं। अब आशुलिपिकों के बजाए कम्प्यूटर को सीधे डिक्टेशन दी जा सकती है और यह प्रक्रिया अपेक्षाकृत कम श्रम और समय साध्य है। इस सॉफ्टवेयर की मदद से हिंदी टाइपिंग न जानने वाले अधिकारी/ कर्मचारी भी कम्प्यूटर पर हिंदी में लिखने की क्षमता से युक्त बन रहे हैं। इसके साथ ही हिंदी के टेक्स्ट टू स्पीच सॉफ्टवेयर व्दारा किसी अन्य कार्य में व्यस्त रहने पर भी हिंदी पत्रों का मजमून सुनकर समझा जा सकताहै। आज के समय में तकनीक का प्रयोग कर कार्यालयों में अधिकारी व कर्मचारी बिना किसी पर आश्रित रहे हिन्दी में कार्यालय आदेश/परिपत्र/ पत्र/निविदा पत्र आदि तैयार करने में बड़ी सहूलियत महसूस कर रहे हैं और कार्यालयों में राजभाषा हिंदी में पत्राचार भी बढ़ रहा है।

हिन्दी शब्दकोश:

अगर किसी भाषा में कुछ काम करना है, और हमारी

पकड़ उस भाषा में अच्छी नहीं है, तो उस स्थिति में शब्दकोश की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। वही स्थिति होती है जब अंग्रेजी में काम करने में प्रशिक्षित व्यक्ति हिंदी में काम करना शुरू करता है, तो उसे शब्दों की सटीक अभिव्यक्तियां नहीं मिल पाती और इस काम को ऑनलाइन/तकनीकी शब्दकोश का बहुत महत्व होता है। ई-बुक के रूप में उपलब्ध शब्दकोश का अवलोकन काफी आसानी से किया जा सकता है और इसका डिज़ाइन प्रयोगकर्ता की आवश्यकतानुसार किया जा सकता है। ई-शब्दकोश के प्रयोग से हिंदी अनुवाद में तो आसानी हुई ही है, साथ ही अंग्रेज़ी में काम करने के अभ्यस्त लोगों को भी हिंदी में लिखने में आसानी होती है। ई-शब्दकोश के स्मार्ट इस्तेमाल से लोगों में हिंदी में लिखने संबंधी जागरूकता बढ़ी है। इसी जागरूकता का सीधा असर कार्यालयों में हिंदी कामकाज पर भी पड़ा है।

आज कार्यालयों में राजभाषा हिंदी में अगर कार्य बढ़ता जा रहा है, तो उसमें तकनीकी का बहुत बड़ा योगदान है। तकनीकी की मदद से आज हिंदी में काम करना बहुत आसान हो गया है। आज केन्द्रीय सरकार के लगभग सभी कार्यालयों में प्रस्तुत होने वाले मैनुअल, संदर्भ व प्रक्रिया साहित्य हिंदी में उपलब्ध हो गए हैं। सभी कार्यालयों की वेबसाइटें हिंदी में उपलब्ध हैं। लोगों में हिंदी में काम करने की ललक तो अवश्य बढ़ी है। यद्यपि तकनीकी की मदद से बहुत काम हिंदी में किया जाना संभव हो पाया है तथापि हिंदी भाषा के विकास के लिए तकनीकी की सभी संभावनाओं का प्रयोग अभी भी प्रक्रिया में है। तमाम सॉफ्टवेयरों की लोकलाइज़ेशन अभी प्रगति पर है। कुछ सॉफ्टवेयर अंग्रेज़ी व कुछ अन्य भाषाओं के लिए तो बहुत अच्छा कार्य करते हैं परंतु हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं में उतनी दक्षता से कार्य नहीं कर पाते हैं। देश भर में प्रायः सभी कार्यालयों में अपने आंतरिक काम-काज के लिए इन्टरनेट व अन्य प्रचालन सॉफ्टवेयर बनवाए जाते हैं, परंतु दुःखद यह है कि इनमें से अधिकांश अंग्रेज़ी में ही होते हैं। जिसमें न चाहते हुए भी तमाम लोगों को अंग्रेज़ी में काम करना पड़ता है। इसमें कार्यालयों में कुछ काम मजबूरी के चलते भी अंग्रेज़ी में करना पड़ता है। जिस कम्प्यूटर टेक्नॉलोजी ने आरम्भ में राजभाषा के विकास और प्रचार व प्रसार में खलनायक की भूमिका निभाई थी, वही आज इसकी सबसे बड़ी दोस्त बनकर उभरी है। भाषा की प्रगति तकनीकी रूप से न होती तो भारत सरकार का राजभाषा प्रचार-प्रसार अभियान इतनी गति नहीं पकड़ सकता था। यद्यपि जितनी प्रगति आज हुई है, वह अभी भी अपर्याप्त है। मुकम्मल प्रगति के लिए भारत सरकार को अपने शोध संस्थानो में भाषा-प्रौद्योगिकी को भारतीय भाषाओं के लिए विकसित करने हेतु अनुसंधान पर ज़ोर देना चाहिए। देश में कम्प्यूटर साक्षरता की दर और बढ़ाने की आवश्यकता है ताकि वर्तमान सरकार जिस 'डिजीटल इंडिया' की संकल्पना लेकर चल रही है, उसे भाषा प्रौद्योगिकी को विकसित किए बिना कारगर ढंग से लागू नहीं किया जा सकता है । भाषा प्रौद्योगिकी के विकसित स्वरूप पर ही राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी रूप से लागू करने में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

सिक्कों की मिंटिंग

प्रेरणा पुरी
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

मिंटिंग एक बहुत पुरानी प्रक्रिया है जिसमें सिक्के कई चरणों से होकर गुज़रते हैं। आज भी सिक्कों की ढलाई के लिए वैसी ही प्रक्रियाएं अपनाई जाती हैं जैसे पहले, अंतर केवल इतना है कि अब इनमें अत्याधुनिक तकनीकों का प्रयोग करके, जिसे तकनीकी शब्दावली में 'स्टेट ऑफ टेक्नॉलोजी' भी कहते हैं, इस प्रक्रिया को तेज़ तथा प्रभावी बनाया जाता है।

पौराणिक मिंटिंग की प्रक्रिया तथा आज की प्रक्रिया में अंतर इतना है कि वर्तमान में अधिक गुणवत्ता के साथ बड़े पैमाने पर काम किया जाता है। पहले ही की तरह आधुनिक सिक्का प्रेस में भी सिक्के के आगे के भाग (ऑब्वर्स) के लिए एक तथा पीछे (रिवर्स) के लिए दूसरी वर्किंग डाई होती है, साथ में स्टील का एक गोलाकार टुकड़ा होता है जिसे कॉलर के रूप में जाना जाता है, जो सिक्के के किनारों को गढ़ता है। वित्त मंत्रालय ने 6 मार्च, 2019 को एक अधिसूचना जारी कर देश में 5 नए सिक्के लॉन्च करने की घोषणा की थी, जिनमें रुपया 1, रुपए 2, 5, 10 और 20 के सिक्के शामिल हैं। सिक्कों की नई श्रृंखला दृष्टिबाधित लोगों के लिए सुलभ है और इनका डिज़ाइन बेहतर तरीके से और बारीकी से गढ़ा गया है। सिक्कों का डिज़ाइन राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान द्वारा तैयार किया गया और भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड एवं वित्त मंत्रालय ने देश में नए सिक्कों की शुरूआत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत सरकार टकसाल में परिचालन सिक्कों के अतिरिक्त स्मारक सिक्कों, स्मारिका सिक्कों तथा मेडलों का भी निर्माण किया जाता है। सिक्कों तथा मेडलों की ढलाई उनके डिज़ाइन से लेकर अंतिम उत्पाद तक विभिन्न चरणों में होती है:

सिक्कों का निर्माण डिज़ाइन के रूप में शुरू होता है, जो कलाकार द्वारा कागज़ और पेंसिल के साथ हाथ से या कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर का उपयोग करके बनाए जाते हैं। सिक्के का डिज़ाइन न केवल एक डिज़ाइनर की कलात्मकता या कौशल का परिणाम होता है, बल्कि वह उसके अनुसंधान कौशल के साथ-साथ विभिन्न दृश्य संदर्भों की एक विशाल श्रृंखला को समझने की प्रक्रिया होती है।

विभिन्न प्रस्तावित डिज़ाइनों में से चयनित डिज़ाइन का उत्कीर्णक वास्तविक सिक्के से पाँच गुना बड़ा मॉडल बनाते है। मॉडल बनाने के लिए सिंथेटिक मिट्टी का इस्तेमाल किया जाता है, जिसमें छोटे उपकरणों की मदद से बारीकियों पर ध्यान देते हुये फ़ाइनल रिलीफ़ तैयार करते है ।

बनाए गए रिलीफ़ मॉडल का पीओपी (प्लास्टर ऑफ पेरिस) में निगेटिव ढांचा तैयार करते है। ढाले गए निगेटिव ढांचे को स्कैनर मशीन[1] (डिजिटाइज़िंग स्कैनर सिस्टम) में स्कैन करते है, जिससे बनाए गए मॉडल का एक नया प्रारूप तैयार हो जाता है। अगर कुछ त्रुटियाँ रह गयी हों तो उसे कम्प्युटर में सॉफ्टवेर की मदद से ठीक किया जा सकता है व मॉडल के साथ टाइप (अक्षर) को भी जोड़ दिया जाता है।

पूरी तरह से तैयार हुए मॉडल को नरम और ठोस ब्लॉक में आकार छोटा करके पूर्व निर्धारित आकार में बदलकर स्टील धातु में डाई बनाई जाती है। डाई बनाने के लिए लेज़र

1 लैंग स्कैनिंग मशीन में प्लास्टर मॉडल का नेगेटिव बनाने के बाद इस मशीन में स्कैन करके सॉफ्ट कॉपी में बदलकर उसमें त्रुटियाँ सही करते है।

एंग्रेविंग मशीन[2] या फिर सीएनसी (कम्प्युटर न्यूमेरिकल नियंत्रक) [3]से स्टील धातु पर उत्कीर्ण किया जाता है। स्टील डाई पर मॉडल (डिज़ाइन) एंग्रेव होने के बाद उसे टर्निंग के लिए डाई विभाग में भेज दिया जाता है। डाई विभाग में उत्कीर्णित डिज़ाइन की टर्निंग कर मशीन के अनुरूप उसमें थोड़ा बदलाव करते हैं। टर्निंग के बाद वापस कला एवं उत्कीर्णन विभाग में डाई पर बारीकी से टच-अप कर वरिष्ठ उत्कीर्णक व्दारा त्रुटि को ठीक कर डाई विभाग में कठोरण (हार्डनिंग) की प्रक्रिया के लिए भेज दिया जाता है । डाई विभाग में कठोरण कर सिक्के व मेडल की छपाई के लिए विभाग में दे दिया जाता है।

सिक्के बनाने वाले धातु की आपूर्ति बड़े कुंडलित पट्टियों (स्ट्रिपस) में की जाती है जिन्हें ब्लैंकिंग प्रेस व्दारा आवश्यक आकार में काटा जाता है। इसके बाद ब्लैंकिंग प्रेस सिक्कों को ढालने के लिए ब्लैंक डिस्क पर पंच करती है।

ब्लैंक की जांच करके उन्हें एनीलिंग और ब्लैंचिंग चरण में भेजा जाता है, जहां इन्हें साफ़ करके, इन्हें सिक्कों को गढ़ने के लिए उपयुक्त बनाया जाता है।

प्रूफ़ ब्लैंक को स्वचालित प्रेस में डाला जाता है। अंतिम प्रक्रिया में वास्तविक ढलाई होती है जिसमें डिज़ाइन को सिक्के के ब्लैंक पर स्थानांतरित किया जाता है। ब्लैंक को दो डाइयों के बीच परिवर्तनीय दबाव के साथ अंकित किया जाता है। प्रत्येक स्ट्राइक[4] का दबाव और अवधि धातु के प्रकार और सिक्के की विशेषताओं के अनुसार अलग-अलग होती। ब्लैंक पर डाई को दबाने से तैयार सिक्के का आकार बनता है। किसी दिए गए सिक्के पर होने वाली स्ट्राइक की संख्या उपयोग की गई सामग्री तथा सिक्के की आवश्यकता पर निर्भर करती है, जो दर्पण जैसी साफ और पारदर्शी भी हो सकती है अथवा प्राचीन दिखाई देने वाली भी।

इसके बाद सिक्कों का अंतिम निरीक्षण किया जाता है। फिर उन्हें आगे पैकिंग चरण में भेजा जाता है।

2 एसीएसवाईएस (लेज़र एंग्रेविंग मशीन) में डिज़ाइन के आकार को रिडक्सन (छोटा) कर उसे सिक्के की हार्ड डाई में ढाला जाता है।

3 LANG IMPALA 400 सीएनसी (कम्प्युटर न्यूमेरिकल नियंत्रक) में डिज़ाइन के आकार को रिडक्सन (छोटा) कर उसे सिक्के की सॉफ्ट ब्लॉक में बनाते है। टर्निंग के बाद डाई विभाग ब्लॉक को डाई का आकार देता है।

4 स्ट्राइकिंग अर्थात ठप्पा मारने की प्रक्रिया। आब्वर्स और रिवर्स, दो डाइयों के बीच ब्लैंक को रखकर ब्लैंक पर ठप्पा मारा जाता है, जिससे डाई का डिज़ाइन ब्लैंक पर आ जाता है, जिससे सिक्का बनता है।

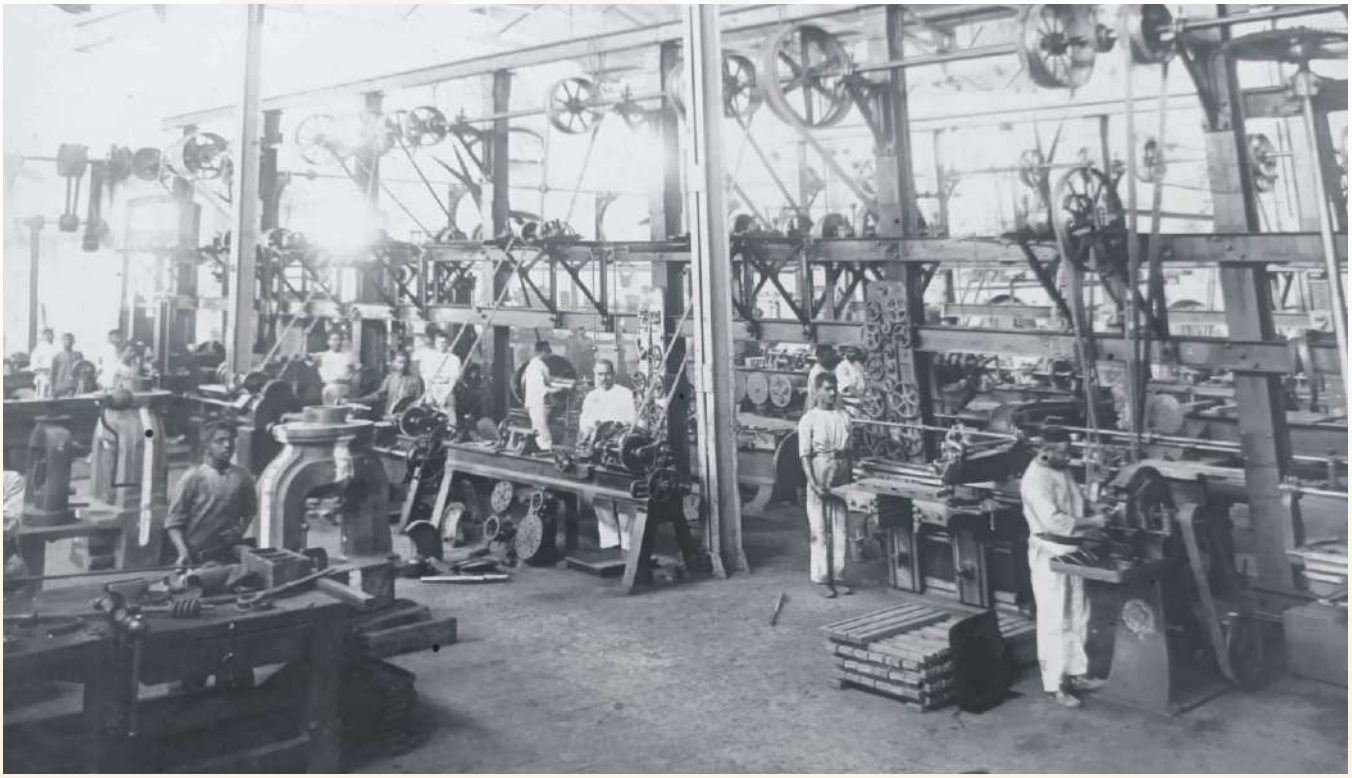

कौन हैं 2023 के नोबेल पुरस्कार विजेता और क्यों मिला है इन्हें पुरस्कार?

आर्थिक विज्ञान में नोबेल 2023:

इस वर्ष आर्थिक विज्ञान में नोबेल, जिसे आधिकारिक तौर पर स्वेरिजेस रिक्सबैंक पुरस्कार के रूप में जाना जाता है, हार्वर्ड प्रोफेसर **क्लौडिया गोल्डिन** को प्रदान किया गया।

उनके शोध के अनुसार पिछली दो सदियों में महिला श्रमिकों की भागीदारी में यू-आकार का वक्र सामने आया। यह वक्र 19वीं सदी में समाज के कृषि अर्थव्यवस्था से औद्योगिक में संक्रमण के दौरान महिला श्रमिकों की भागीदारी की प्रतिशत में गिरावट का और इसके बाद 20वीं सदी में सेवा क्षेत्र की वृद्धि को दर्शाता है। गोल्डिन के अनुसार इस बदलते पैटर्न के पीछे समाज के बदलते मानदंड और संरचनात्मक परिवर्तन हैं।

मेडिसिन में नोबेल 2023:

फिजियोलॉजी या मेडिसिन में 2023 का नोबेल पुरस्कार संयुक्त रूप से **कैटालिन कारिको** और **ड्रू वीसमैन** को एमआरएनए तकनीक में उनके अग्रणी काम के लिए दिया गया, जो कोविड-19 वैक्सीन के विकास में सहायक है।

भौतिकी में नोबेल 2023:

भौतिकी में 2023 का नोबेल पुरस्कार **पियरेएगोस्टिनी, फेरेंकक्राउज़** और **ऐनीएल'हुइलियर** को उनकी अभूतपूर्व प्रयोगात्मक तकनीकों के लिए दिया गया, जो प्रकाश के एटो सेकंड पल्स उत्पन्न करते हैं, जो पदार्थ में, विशेष रूप से परमाणुओं और अणुओं में इलेक्ट्रॉन गतिशीलता के गहन अध्ययन को सक्षम करते हैं।

रसायन विज्ञान में नोबेल 2023:

रसायन विज्ञान में 2023 का नोबेल पुरस्कार क्वांटम डॉट्स – छोटे नैनो कणों की खोज और संश्लेषण के लिए मौंगी जी **बावेंडी, लुईस ई ब्रूस** और **एलेक्सी आई एकिमोव** को दिया गया। इन नैनों कणों के कई गुण इनके आकार पर निर्भर करते हैं।

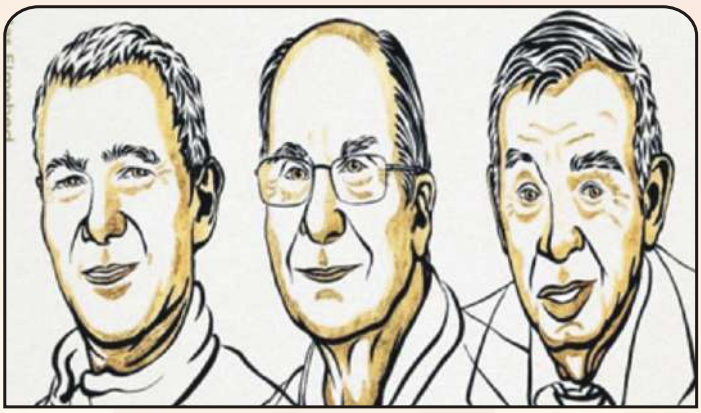

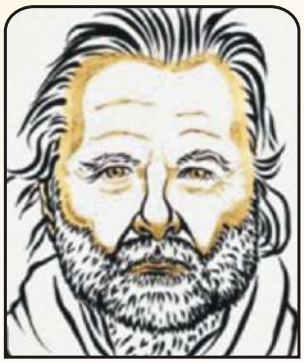

साहित्य में नोबेल 2023:

नॉर्वेजियन लेखक **जॉनफॉसे** को उनके नवोन्मेषी नाटकों और गद्य के लिए साहित्य में नोबेल पुरस्कार मिला, जिसमें उन्होंने नाटकों, उपन्यासों, कविता, निबंधों, बच्चों की किताबों और अनुवादों सहित विविध शैलियों में अनकहे को आवाज दी।

नोबेल शांति पुरस्कार 2023:

2023 का नोबेल शांति पुरस्कार ईरानी कार्यकर्ता नर्गेस मोहम्मदी को ईरान में महिलाओं के उत्पीड़न के खिलाफ उनकी अथक लड़ाई और मानवाधिकारों और स्वतंत्रता को बढ़ावा देने के लिए उनकी अटूट प्रतिबद्धता के लिए प्रदान किया गया। पुरस्कार की घोषणा करते हुए उनके बारे में कहा गया है कि कई बार गिरफ्तार होने के साथ व्यक्तिगत कठिनाइयों और परेशानियों का सामना करने के बावजूद, मोहम्मदी ने अपना साहसी संघर्ष जारी रखा है।

कहाँ और कब से हुई नोबेल पुरस्कारों की शुरुआत?

वैज्ञानिक अल्फ्रेड नोबेल ने 'डाइनामाइट' नामक विस्फोटक का आविष्कार किया था। 10 दिसंबर 1896 को इटली के सौन रेमो में अल्फ्रेड नोबेल का देहांत हो गया। जीवन के अंतिम दिनों में उन्हें युद्ध में भारी तबाही मचाने वाले अपने अविष्कारों को लेकर बहुत पश्चाताप था। उन्होंने मानवहित की आकांक्षा से प्रेरित होकर अपने धन का उपयोग नोबेल फ़ाउंडेशन स्थापित करने में किया, जो हर साल भौतिकी, रसायन, चिकित्सा, साहित्य और शांति के क्षेत्रों में सर्वोत्तम कार्य करनेवालों को पुरस्कार देता है।

अल्फ्रेड नोबेल का वसीयतनामा

- नोबेल पुरस्कारों की स्थापना Alfred Nobel के वसीयतनामे के अनुसार 1895 में हुई।
- अल्फ्रेड ने अपनी वसीयत में लिखा कि उनका सारा पैसा नोबेल फाउंडेशन को दे दिया जाए और इन पैसों से नोबेल पुरस्कार दिया जाए।
- उन्होंने अपनी वसीयत में लिखा था कि उनकी संपत्ति का अधिकांश हिस्सा एक फंड में रखा जाए और उसके सालाना ब्याज से मानवजाति के लिए उत्कृष्ट योगदान देनेवालों को पुरस्कृत किया जाए।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा भारत सरकार टकसाल का निरीक्षण

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा दिनांक 7.10.2022 को भारत सरकार टकसाल, मुंबई में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में हुई प्रगति का निरीक्षण किया गया। समिति द्वारा टकसाल, मुंबई के राजभाषा कार्यान्वयन की सराहना की गई तथा आगामी प्रयासों के लिए मार्गदर्शन किया गया।

संयुक्त राजभाषा सम्मेलन एवं कार्यशाला

एसपीएमसीआईएल निगम कार्यालय तथा इसके नियंत्रण में 09 इकाइयों के राजभाषा अधिकारियों एवं अनुवादकों के लिए दिनांक 19.01.2023 व 20.1.2023 को भारत सरकार टकसाल, मुंबई में राजभाषा सम्मेलन एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री एस. के. सिन्हा, निदेशक (मानव संसाधन), एसपीएमसीआईएल व्दारा की गई। कार्यक्रम में भारत सरकार टकसाल, मुंबई के मुख्य महाप्रबंधक श्री सुधीर साहू, सहित इकाई के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण तथा राजभाषा संवर्ग के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित हुए।

यह दो दिवसीय कार्यक्रम सभी के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक रहा तथा इससे प्रतिभागियों में हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए सकारात्मक ऊर्जा का संचार हुआ।

हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

भारत सरकार टकसाल, (एसपीएमसीआईएल की इकाई) मुंबई में मुख्य महाप्रबंधक श्री सुधीर साहू की अध्यक्षता में 14 से 29 सितंबर, 2023 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। हिन्दी पखवाड़े की शुरुआत राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार श्री शिव छत्रपति स्पोर्ट्स कोम्प्लेक्स, बालेवाड़ी पुणे (महाराष्ट्र) से की गई तथा इसका समापन भारत सरकार टकसाल मुंबई में किया गया।

पखवाड़े के दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

1. निबंध प्रतियोगिता:

निबंध के विषय थे:

I. **टकसाल मुंबई में निगमीकरण से पूर्व व पश्चात कार्यशैली** अथवा

ii. **राजभाषा उत्थान में तकनीकी की भूमिका**

हिन्दी निबंध प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक संख्या में अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भाग लिया।

2. अनुवाद एवं पत्र लेखन प्रतियोगिता:

इस प्रतियोगिता में एक प्रश्न पत्र दिया गया था, जिसमें अनुवाद, पत्र लेखन, मुहावरे हिन्दी से अंग्रेजी तथा अंग्रेजी से हिन्दी लिखने के लिए दिए गए थे, जिसका उद्देश्य था कि कर्मचारी हिन्दी के नए शब्द, वाक्य विन्यास सीखें, हिन्दी अँग्रेजी, शब्दकोश देखें ।

3. आशु भाषण प्रतियोगिता:

पखवाड़े को अधिक रोचक बनाने के लिए नवोन्मेष के अन्तर्गत पहली बार आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत प्रतिभागी को लॉटरी प्रक्रिया द्वारा दिये गये विषय पर 1 से 2 मिनट

के लिए भाषण देना था। यह प्रतियोगिता सभी वर्ग के कर्मचारियों के लिए थी।

4. फाइल नोटिंग प्रतियोगिता:

यह प्रतियोगिता केवल कार्यपालको के लिए थी। इस प्रतियोगिता में अधिकारियों द्वारा दैनिक कार्यों में फाइलों पर की जाने वाली नोटिंग अंग्रेजी से हिन्दी में लिखनी थी।

5. हस्त लेख प्रतियोगिता:

यह प्रतियोगिता केवल सुरक्षा कर्मियों तथा कामगारों के लिए थी। इस के अन्तर्गत एक पैराग्राफ दिया गया था जिसे अपनी हस्तलिपि में लिखना था।

6. प्रश्न मंच प्रतियोगिता:

इस प्रतियोगिता में वर्गीकृत कर्मचारियों तथा औद्योगिक कामगारों के लिए अलग-अलग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था, जिसमें सामान्य ज्ञान विषय से संबंधित प्रश्न पूछे गये थे।

29 सितंबर, 2023 को मुख्य महाप्रबंधक श्री सुधीर साहू द्वारा पुरस्कार वितरण तथा हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर राजभाषा अनुभाग

द्वारा पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई सभी प्रतियोगिताओं के दृश्यों तथा विश्व में राजभाषा हिन्दी की स्थिति के साथ-साथ संविधान में राजभाषा का प्रावधान, सभी को समाहित करते हुए इसकी जानकारी एक विडियो के माध्यम से प्रदर्शित की गई। श्रीमती इंदरदीप कौर, उप महाप्रबन्धक (मा. सं.) ने राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि राजभाषा के क्षेत्र में एसपीएमसीआईएल के शीर्ष प्रबंधन द्वारा अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में किया जा रहा है। अतः हम सभी को इससे सीख लेते हुए अपने दैनिक कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने चाहिए। अंत में, श्री सुधीर साहू, मुख्य महाप्रबन्धक ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा अनुभाग द्वारा विडियो के माध्यम से दी गई जानकारी सराहनीय है। इस तरह से नवोन्मेष तथा नवाचार प्रत्येक विभाग को करना चाहिए। इसके साथ ही, इकाई में राजभाषा कार्यान्वयन को कैसे बढ़ाया जाए उस संबंध में अपना मार्गदर्शन दिया।

प्रतियोगिता में पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों का विवरण:

1. निबंध प्रतियोगिता:

प्रथम पुरस्कार:

1. श्री राहुल विनेरकर, प्रशिक्षु लेखा कार्यालय (गैर-हिन्दी भाषी)
2. श्री अजय तिवारी,पर्यवेक्षक (हिन्दी भाषी)

द्वितीय पुरस्कार:

1. सुश्री कविता एस. मोरे, व. कार्यालय सहायक (गैर-हिन्दी भाषी)
2. श्री दिनेश सुथार,प्रबंधक (सू. प्रौ.) (हिन्दी भाषी)

तृतीय पुरस्कार:

1. श्री मनीष पगार, व. पर्यवेक्षक (तकनीकी)(गैर-हिन्दी भाषी)
2. श्री पुरेन्द्र सी. दूबे, वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक (हिन्दी भाषी)

सांत्वना पुरस्कार:

1. श्री नीलू द्विवेदी, संयुक्त महाप्रबंधक (सू. प्रौ.)
2. श्री अविनाश भा. घोडके, प्रचालक, रिकार्डर विभाग
3. सुश्री टी. स्वप्ना कुमारी, वरिष्ठ बुलियन सहायक
4. श्री आर. व्ही. बिरवटकर, व. कार्यालय सहायक

2. अनुवाद एवं पत्र लेखन प्रतियोगिता:

प्रथम पुरस्कार:

1. सुश्री नीता राजेश ,वरिष्ठ पर्यवेक्षक (धा. परी.)

द्वितीय पुरस्कार:

1. श्री पुरेन्द्र सी. दूबे, वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
2. श्री नीतिन म. चाफले, व. कार्यालय सहायक

तृतीय पुरस्कार:

1. सुश्री स्वप्नाली देवेंद्र मोरे, वरिष्ठ कार्यालय सहायक
2. श्री अमित भा. कौलकार, क. कार्यालय सहायक
3. श्री ज्ञानेश्वर हरी पाटिल, प्रचालक, डाई विभाग

सांत्वना पुरस्कार:

1. सुश्री चंद्राणी पॉल, पर्यवेक्षक (आर & डी)
2. सुश्री पुष्पा बेहेरा, क. कार्यालय सहायक
3. श्री स्वप्निल वाघ, क. कार्यालय सहायक

3. काव्यपाठ प्रतियोगिता:

प्रथम पुरस्कार:

1. सुश्री नीता राजेश,वरिष्ठ पर्यवेक्षक (धातु परीक्षण)

द्वितीय पुरस्कार:

1. श्री अजय तिवारी, पर्यवेक्षक
2. सुश्री कविता एस. मोरे, वरिष्ठ कार्यालय सहायक

तृतीय पुरस्कार:

1. श्री पांडुरंग तोरसकर, क. कार्यालय सहायक
2. श्रीगोपाल शरद होडावडेकर, वरिष्ठ प्रचालक
3. सुश्री सुमन उल्हास जगदाले, व. पर्यवेक्षक

सांत्वना पुरस्कार:

1. सुश्री गौरी कुट्टी, पर्यवेक्षक
2. श्री विजयशंकर मौर्य, प्रचालक
3. सुश्री पुष्पा बेहेरा, कनिष्ठ कार्यालय सहायक

4. टिप्पण लेखन प्रतियोगिता-अधिकारी वर्ग:

1. श्री अखिल भगत, प्रबंधक (सतर्कता)
2. श्री नीलू द्विवेदी, संयुक्त महाप्रबंधक (सू. प्रौ.)
3. सुश्री प्रियंका शर्मा, प्रबंधक (तकनीकी)
4. श्री सदानंद मंडल, प्रबंधक (त. प्र.)
5. श्री दिनेश सुथार, प्रबंधक (सू. प्रौ.)
6. सुश्री स्रग्धरा मजुमदार, उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
7. सुश्री हिमांशी, सहायक प्रबंधक (विपणन)
8. श्री सोनक गुहा, सहायक प्रबंधक (त. प्र.)

5. हस्त-लेख प्रतियोगिता:

औद्योगिक कामगार :

1. श्री शरद आसाराम खारवणे, वरिष्ठ प्रचालक, टि.न. 3805/1994
2. श्री रणजित प्रेमसिंग पाटील, टि.न.3766, वरिष्ठ प्रचालक
3. श्री विजय शंकर मौर्य, प्रचालक
4. श्री अविनाश घोडके, प्रचालक
5. श्री प्रकाश र बाईत, फोरमैन प्रेस शॉप
6. श्री अतुल वि. घाग, प्रचालक

6. उत्कृष्ट राजभाषा पुरस्कार (पर्यवेक्षकों के लिए)

1. श्री मोहित बस्सी, पर्यवेक्षक (आर & डी)
2. श्री सतीश बराडी, पर्यवेक्षक (त. प्र.)
3. श्री गुलशन सैनानी, व. पर्यवेक्षक
4. सुश्री गौरी कुट्टी, पर्यवेक्षक

7. मिंट पत्रिका-2022 में लेख लिखने वाले कामगार

1. श्री जगदीश पवार, वरिष्ठ प्रचालक- शीर्षक: गुमशुदा पिता
2. श्री सुनील रॉय, कंपाउंडर, दवाखाना विभाग- शीर्षक: संस्कृत घोषवाक्ये

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), मुंबई द्वारा भारत सरकार टकसाल को पुरस्कार

25 जुलाई, 2023 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (न.रा.का.स.) (उपक्रम), मुंबई की 71वीं बैठक में भारत सरकार टकसाल, मुंबई को वर्ष 2022-23 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

:: हिन्दी पखवाड़े की कुछ झलकियाँ ::

गोल्ड रिफाइनरी का उद्घाटन

भारत सरकार टकसाल, मुंबई में दिनांक 18.01.2023 को एसपीएमसीआईएल के तत्कालीन अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक सुश्री तृप्ति घोष द्वारा गोल्ड रिफाइनरी का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर श्री सुनील सिन्हा, निदेशक (मा.सं.), इकाई के मुख्य महाप्रबंधक श्री सुधीर साहू, महाप्रबंधक श्री सुनील तिवारी, संयुक्त महाप्रबंधक (धातु परीक्षण) श्री बिमल धल तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

यह गोल्ड रिफाइनिंग संयंत्र पूर्ण रूप से स्वदेशी है जो कि भारत सरकार की नीति मेक इन इंडिया : आत्म निर्भर भारत को पूर्ण रूप से सार्थक करता है। इस मशीन की उत्पादन क्षमता 100 कि. ग्रा. प्रतिदिन की है। इस मशीन की स्थापना से भारत सरकार टकसाल, मुंबई को गोल्ड रिफाइनिंग के क्षेत्र में अपने ग्राहकों को निश्चित अवधि में उत्तम सेवाएं देने के लिए सक्षम बनाया है। भविष्य में इसकी स्थापना एलबीएमए (LBMA) और अन्य संगठनों से लाइसेन्स/ मान्यता लेने में सहायक होगी। इससे पूर्व रिफाइनिंग के संयंत्र विदेश से आयात किये जाते थे जबकि इसके पूर्ण रूप से स्वदेशी होने के साथ- साथ इस मशीन के सभी कलपुर्जे स्वदेशी /लोकल उपलब्ध है। इस मशीन को पूर्ण रूप से प्रतिस्पर्धात्मक निविदा के माध्यम से खरीदा गया।

टकसाल, मुंबई को एनएबीएल (NABL) की तरफ से इस वर्ष ISO 17034 : 2016 मानक के अनुरूप प्रत्यायन प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ है। हमें एनएबीएल से संदर्भ पदार्थ उत्पादक (Reference material producer) के लिए लाइसेंस प्राप्त है जो कि हमारे लिए गौरव की बात है। इस मान्यता के उपरांत अब टकसाल, मुंबई केवल भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के लिए स्वर्ण के सर्टिफ़ाइड रिफरेंस मटेरियल का निर्माण कर सकती है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

भारत सरकार टकसाल, मुंबई में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

भारत सरकार टकसाल, मुंबई में सतर्कता सप्ताह का आयोजन दिनांक 31 अक्टूबर से 5 नवंबर 2022 तक किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं जैसे – ग्राम सभा, पोस्टर बनाना, माहिम तथा परेल की निवासी कॉलोनियों में सतर्कता की भावना को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए बच्चो के बीच वाद–विवाद, स्लोगन राइटिंग की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को समापन के दिन मुख्य महाप्रंबधक व्दारा पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

सेवानिवृत्त वर्ष : 2022

वर्गीकृत कर्मचारी

श्री एस.ए.दळवी
सुरक्षा रक्षक
सेवानिवृत्ति: 28-02-2022

श्री ए.एस.काळे
पर्यवेक्षक (ड्राफ्ट्समेन)
सेवानिवृत्ति: 28-02-2022

श्री डी.एस.भांगरे
कैंटीन अटेंडेंट
सेवानिवृत्ति: 28-02-2022

श्री पी.पी.म्हैसपुरकर
प्रबंधक (त.प्र.)
स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति: 04-04-2022

श्री डी.के.काशीद
सुरक्षा रक्षक
सेवानिवृत्ति: 30-06-2022

श्री डी.डी.पालकर
वरिष्ठ सुरक्षा रक्षक
सेवानिवृत्ति: 31-10-2022

श्री एम.जी.खेडेकर
बुलियन लेखापाल
सेवानिवृत्ति: 31-12-2022

औद्योगिक कामगार

श्री वी.जी.बोरे
प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-01-2022

श्री ए.एस.गोसावी
फोरमेन
सेवानिवृत्ति: 31-01-2022

श्री एस.व्ही.पवार
प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 28-02-2022

श्री एस.जी.मोरे
प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 28-02-2022

श्री एस.जे.वारंग
वरिष्ठ प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-03-2022

श्री के.के.पाटील
वरिष्ठ तकनीशियन
सेवानिवृत्ति: 31-03-2022

श्री पी.व्ही.चव्हाण
वरिष्ठ तकनीशियन
सेवानिवृत्ति: 31-03-2022

श्री बी.एस.जाधव
वरिष्ठ प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-03-2022

श्री जे.जी.मोइटे
प्रचालक
स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति: 11-05-2022

श्री पी.बी.सावंत
फोरमेन
स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति: 14-05-2022

श्री ई.एच.गोरुळे
प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-05-2022

श्री आर.एस.पवार
फोरमेन
सेवानिवृत्ति: 31-05-2022

श्री बी.एम.वाडकर
वरिष्ठ प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-05-2022

श्री एस.एम.पाटील
प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-05-2022

श्री पी.डी.गलांडे
प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-05-2022

श्री डी.आर.शेलके
वरिष्ठ प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-05-2022

श्री जी.एच.पाटील
प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-05-2022

श्री ई.पी.आसबे
वरिष्ठ प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-05-2022

श्री एल.एस.पाडेकर
प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-05-2022

श्री ई.के.चव्हाण
प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-05-2022

श्री बी.बी.भंडारे
वरिष्ठ प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-05-2022

श्री डी.डी.भाईक
वरिष्ठ प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 30-06-2022

श्री आर.पी.गुरव
वरिष्ठ प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 30-06-2022

श्री पी.जी.पेडणेकर
प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 30-06-2022

श्री एस.जे.भोसले
फोरमेन
सेवानिवृत्ति: 30-06-2022

श्री ए.बी.डिगे
वरिष्ठ प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 30-06-2022

श्री एस.एल.चव्हाण
वरिष्ठ प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-07-2022

श्री व्ही.ए.वाघमोड़े
प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-07-2022

श्री जे.आर.पाटील
प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-08-2022

श्री एन.व्ही.गुरव
वरिष्ठ प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 30-09-2022

श्री डी.पी.पनलेकर
प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 30-09-2022

श्री डी.पी.धादवड
प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-10-2022

श्री आर.डी.नाईकसाटम
फोरमेन
सेवानिवृत्ति: 31-10-2022

श्री यु.एम.कदम
वरिष्ठ प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 30-11-2022

श्री एस.एन.दळवी
प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 30-11-2022

श्री एस.जी.पेडणेकर
प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 30-11-2022

श्री पी.बी.जी. खान
वरिष्ठ प्रचालक
स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति: 31-12-2022

श्री डी.जे.शिर्के
वरिष्ठ प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-12-2022

श्री जे.जी.पवार
वरिष्ठ प्रचालक
सेवानिवृत्ति: 31-12-2022

:: अन्य गतिविधियां ::

स्वतन्त्रता दिवस

वृक्षारोपण अभियान

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

आँखों की जांच का कैंप

दीपावली

स्वच्छता पखवाड़ा

:: अन्य गतिविधियां ::

हर घर तिरंगा

योग दिवस

नए सिक्कों का शुभारंभ

लोक उद्यम दिवस

अंगदान महोत्सव पर सेमिनार

नवरात्रि

:: दैनिक उपयोग में आने वाली टिप्पणियां ::

1. केवल सूचना के लिए/ सूचनार्थ
   For information only.

2. आदेश के लिए प्रस्तुत है।
   Submitted for orders.

3. सचिव की ऊपर की टिप्पणी के प्रसंग में प्रस्तुत है।
   Submitted with reference to Secretary's note above.

4. पत्र मिलने की सूचना भेज दी गई है। (पावती भेज दी गई है)
   The receipt of the letter has been acknowledged.

5. संबन्धित आदेशों पर पर्चियां लगा दी गई हैं।
   Relevent orders are flagged.

6. .....के निदेशानुसार मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।
   Draft as directed by.....is submitted for approval.

7. मसौदा तदनुसार संशोधित कर दिया गया है।
   Draft has been amended accordingly.

8. ज़रूरी कार्रवाई कर दी गई है।
   Needful has been done.

9. मांगी गई/आवेदित आकस्मिक छुट्टी दे दी जाए।
   Casual leave applied for may be granted.

10. हमसे इसका सम्बन्ध नहीं है।
    We are not concerned with this.

11. इसे आवश्यक कार्रवाई के लिए..... को भेजा जाए।
    This may be passed on to.....for necessary action.

12. कागज़/पत्र इसके साथ भेजे जा रहे हैं।
    The papers are sent herewith.

13. गृह मंत्रालय के दिनांक..... के कार्यालय ज्ञापन संख्या.....की प्रतिलिपि फाइल में रख दी गई है।
    A copy of Ministry of Home Affairs O.M. No.....dated.....is placed on the file.

14. मामला अभी वित्त मंत्रालय के विचाराधीन है।
    The matter is still under consideration of the Ministry of Finance.